INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

RAS

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

प्रारंभिक + मुख्य परीक्षा हेतु

HANDWRITTEN NOTES

[भाग -1]

राजस्थान का इतिहास + कला एवं संस्कृति

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

प्रारंभिक + मुख्य परीक्षा हेतु

भाग – 1

राजस्थान का इतिहास + कला एवं संस्कृति

<u>प्रस्तावना</u>

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**RAS (Rajasthan Administrative Service) (प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु)"** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**Rajasthan State and Subordinate Services Combined Competitive Exams"** भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें **/***

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Whatsapp Link- https://wa.link/uwc5lp

Online Order Link- https://bit.ly/3X6MGue

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम (2023)

राजस्थान का इतिहास

क्र.सं.	अध्याय	पेज नं.
1.	राजस्थान इतिहास के स्रोत एवं उनकी विशेषताएं • अभिलेख ○ शिलालेख, प्रशस्ति, स्तम्भ लेख • सिक्के • साहित्यिक स्रोत • ताम्रपत्र • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	1
2.	प्रागैतिहासिक स्थल (प्राचीन सभ्यताएं) • पुरापाषाण से ताम्र पाषाण एवं कांस्य युग तक • प्रागैतिहासिक स्थल की विशेषताएं • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	28
3.	ऐतिहासिक राजस्थान • महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक केंद्र	43

	• प्राचीन राजस्थान में समाज, धर्म एवं संस्कृति • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	
4.	प्रमुख राजवंशों के महत्त्वपूर्ण शासकों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां • प्रमुख राजवंश ○ गुहिल वंश ○ प्रतिहार वंश ○ चौहान वंश ○ परमार वंश ○ राठौड़ वंश ○ सिसोदिया वंश ○ कछवाहा वंश • प्रमुख घटनाएँ • प्रमुख युद्ध, उनके कारण एवं परिणाम • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	51
5.	मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक तथा राजस्व व्यवस्था • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	130

6.	राजस्थान में मराठा शक्ति का विस्तार • प्रमुख युद्ध एवं उनके परिणाम • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	134
7.	आधुनिक राजस्थान (19 वीं – 20 वीं शताब्दी की प्रमुख घटनाएँ) • राजस्थान की रियासतें और ब्रिटिश संधियाँ • राजस्थान में 1857 का विद्रोह • विभिन सामाजिक कुरीतियाँ • सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्दे • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	151
8.	राजनीतिक जागरण • राजनीतिक जागरण के लिए उत्तरदायी कारक • समाचार पत्रों एवं राजनीतिक संस्थाओं की भूमिका • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	173
9.	20 वीं शताब्दी में किसान एवं जनजाति आंदोलन	180

	• प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	
10.	विभिन्न देशी रियासतों में प्रजामण्डल आंदोलन • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	194
11.	राजस्थान का एकीकरण • एकीकरण के समय प्रमुख घटनाएँ एवं उनके कारण • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	211

राजस्थान की कला एवं संस्कृति (धरोहर)

क्र.सं.	अध्याय	पेज नं.
1.	राजस्थान की वास्तु परम्परा • प्रमुख मंदिर एवं मंदिर निर्माण की शैलियाँ • महत्त्वपूर्ण किले एवं उनकी विशेषताएं • महत्त्वपूर्ण महल एवं उनकी विशेषताएं • मानव निर्मित जलीय संरचना • राजस्थान में विश्व विरासत के प्रमुख स्थल • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	221
2.	चित्रकला की विभिन्न शैलियाँ, उपशैलियाँ और हस्तशिल्प • मेवाड़, उदयपुर, नाथद्वार, देवगढ़, चावण्ड, मारवाड़, जोधपुर, बीकानेर, किशनगढ़, बूंदी, हाड़ौती इत्यादि • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	272
3.	प्रदर्शन कला एवं ललित कला तथा उनकी विशेषताएं • शास्त्रीय संगीत • शास्त्रीय नृत्य • लोक संगीत एवं वाद्ययंत्र • लोक नृत्य एवं नाट्य	302

	• प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	
4.	भाषा एवं साहित्य • महत्त्वपूर्ण कृतियाँ एवं बोलियां, लोक साहित्य • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	351
5.	धार्मिक जीवन • धार्मिक समुदाय • राजस्थान में संत एवं संप्रदाय • राजस्थान के लोक देवी - देवता • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	370
6.	राजस्थान में सामाजिक जीवन • प्रमुख मेले एवं उनकी विशेषताएं • प्रमुख त्यौंहार एवं उनकी विशेषताएं • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	399
7.	सामाजिक रीति रिवाज एवं परम्पराएँ • विशेषताएं एवं उनका महत्त्व • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	416
8.	वेशभूषा एवं आभूषण • विशेषताएं एवं उनका महत्त्व • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	424
9.	राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	428

राजस्थान का इतिहास

अध्याय – I

राजस्थान इतिहास के स्रोत एवं उनकी विशेषताएं

परिचय –

सामान्यतः इतिहासकार द्वारा अतीत की घटनाओं का गहन अध्ययन करके मानवीय मस्तिष्क को समझना ही इतिहास है।
इतिहास का जनक हेरोडोटस को कहा जाता है वे एक इतिहासकार थे।

> हेरोडोटस (मृत्यु 425 ई. पू.), यूनान के प्रथम इतिहासकार एवं भूगोलवेत्ता थे। उन्होंने अपने इतिहास का विषय पेलोपोनेसियन युद्ध को बनाया था। उनके द्वारा लिखित पुस्तक हिस्टोरिका थी।

इतिहास का अध्ययन : –

इतिहास का अध्ययन करने के लिए इसको तीन भागों में विभाजित किया जाता है –

1. प्रागैतिहासिक काल
2. आद्य ऐतिहासिक काल
3. ऐतिहासिक काल

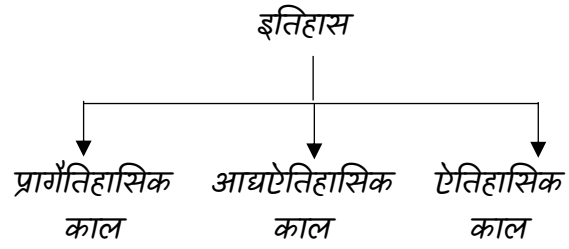

I. प्रागैतिहासिक काल –

वह काल जिसमें कोई भी लिखित स्रोत नहीं मिला अर्थात् सभ्यता और संस्कृति का वह युग जिसमें मानव की उत्पत्ति मानी जाती है। मानव की उत्पत्ति प्रागैतिहासिक काल से ही हुई है।

2. आद्य ऐतिहासिक काल –

आद्य ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसके लिखित स्रोत मिले लेकिन उसको पढ़ा नहीं जा सका जैसे – सिंधु घाटी सभ्यता उसमें जो भाषा थी उसको आज तक पढ़ा नहीं गया है इसलिए इस सभ्यता को आद्य ऐतिहासिक काल की श्रेणी में रखते हैं। इस काल की लिपि को सर्पीलाकार लिपि कहते हैं क्योंकि सिंधु घाटी सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी। इस लिपि को गोमूत्र लिपि एवं "बूस्टोफिदन" लिपि के नाम से भी जानते हैं। इसी प्रकार ईरान और इराक की मेसोपोटामिया की सभ्यता इसी काल की है। राजस्थान में इस काल की सभ्यता में कालीबंगा की सभ्यता देखने को मिलती है अर्थात् कालीबंगा की सभ्यता इसी काल की सभ्यता है।

3. ऐतिहासिक काल

ऐतिहासिक काल वह काल होता है। जिसमें लिखित स्रोत मिले और उनको पढ़ा भी जा सका जैसे वैदिक काल जिसमें वेदों की रचना हुई थी। और उनको पढ़ा भी जा सकता है।
प्राचीन इतिहास के स्रोत – पुरातात्विक एवं साहित्यिक स्रोत।

- **राजस्थान इतिहास को जानने के स्रोत :-**
  इतिहास का शाब्दिक अर्थ है – "ऐसा निश्चित रूप से हुआ है"। इतिहास के जनक यूनान के हेरोडोटस को माना जाता है लगभग 2500 वर्ष पूर्व उन्होंने " हिस्टोरिका" नामक ग्रन्थ की रचना की। इस ग्रन्थ में उन्होंने भारत का उल्लेख भी किया है। भारतीय इतिहास के जनक मेगस्थनीज माने जाते हैं।
  महाभारत के लेखक "वेदव्यास" माने जाते हैं। महाभारत का प्राचीन नाम "जय सहिंता" था।
- राजस्थान इतिहास के जनक "कर्नल जेम्स टॉड" कहे जाते हैं। वे 1818 से 1821 के मध्य **मेवाड़ (उदयपुर) प्रान्त के पॉलिटिकल** एजेंट थे उन्होंने घोड़े पर घूम-घूम कर राजस्थान के इतिहास को लिखा। अतः कर्नल टॉड को **"घोड़े वाले बाबा"** कहा जाता है। इन्होंने "एनल्स एण्ड एंटीक्विटीज

प्रथा व अस्पृश्यता की स्थिति की जानकारी मिलती है।

- इसका लेखक **प्रियपट्ट तथा सूत्रधार** सज्जन था।

घटियाला के शिलालेख (861 ई.):-

- यह शिलालेख जोधपुर के पास घटियाला में एक स्तम्भ पर उत्कीर्ण है जिसमें प्रतिहार शासक कक्कुक के बारे में उल्लेख किया गया है।
- इसमें रोहिलिद्ध से कक्कुक तक प्रतिहार शासकों की वंशावली मिलती है।
- इस शिलालेख से कक्कुक द्वारा आभीरों को परास्त करने की जानकारी मिलती है।
- इसमें मग जाति के ब्रह्माणों का उल्लेख मिलता है।
- कक्कुक द्वारा यह शिलालेख उत्कीर्ण करवाया गया है जिसका रचयिता मग तथा उत्कीर्णकर्ता कृष्णेश्वर था।
- राजस्थान में पहली बार सही प्रथा की जानकारी देता है।

सांमोली शिलालेख (646 ई.) :-

- उदयपुर से प्राप्त यह शिलालेख गुहिल शासक **शिलादित्य** के समय का है।
- इस शिलालेख से मेवाड़ के गुहिल वंश की सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक तथा आर्थिक स्थिति के बारे में जानकारी मिलती है।
- इस शिलालेख की भाषा संस्कृत एवं लिपि कुटिल है। वर्तमान में यह शिलालेख अजमेर संग्रहालय में सुरक्षित है।
- **डॉ. ओझा ने इसे अजमेर संग्रहालय में रखवाया**

घोसुण्डी शिलालेख :-

- यह शिलालेख चित्तौड़गढ़ जिले के नगरी के निकट घोसुण्डी गाँव से प्राप्त हुआ।
- इस शिलालेख को सर्वप्रथम डॉ. डी.आर. भण्डारकर द्वारा खोजा गया / पढ़ा गया था।
- यह राजस्थान में वैष्णव सम्प्रदाय (भागवत् सम्प्रदाय) से सम्बन्धित सबसे प्राचीन शिलालेख है।
- यह शिलालेख लगभग 200-150 ई. पूर्व के लगभग का है तथा इससे यह जानकारी मिलती है कि इस समय राजस्थान में वैष्णव सम्प्रदाय लोकप्रिय हो चुका था।
- घोसुण्डी शिलालेख की लिपि ब्राह्मी एवं भाषा संस्कृत है।
- घोसुण्डी शिलालेख का महत्व भागवत् धर्म के प्रचार, वासुदेव की मान्यता और अश्वमेघ यज्ञ के प्रचलन के कारण अधिक है।
- घोसुण्डी शिलालेख में गजवंश के सर्वतात द्वारा अश्वमेघ यज्ञ करने का उल्लेख मिलता है।
- यह ब्राह्मी तथा संस्कृत दोनों भाषाओँ में है।

प्रश्न- अभिलेख, जो प्राचीन राजस्थान में भागवत सम्प्रदाय के प्रभाव की पुष्टि करता है? (RAS- 2016)

(1) घटियाला अभिलेख

(2) हेलियोदोरस का बेसनगर अभिलेख

(3) बुचकला अभिलेख

(4) घोसुण्डी अभिलेख

Ans. 4

चित्तौड़ का शिलालेख (1438 ई.) :-

- 1438 ई. में काले पत्थर पर उत्कीर्ण यह लेख चित्तौड़ के सतबीस देवरी से प्राप्त हुआ है जिसमें 104 श्लोक हैं।
- इस लेख में मेवाड़ शासक राणा हम्मीर से महाराणा मोकल तक के शासकों की उपलब्धियों का उल्लेख मिलता है तथा हम्मीर को तुर्को को जीतने वाला बताया गया है।
- इस लेख में गुजरात बादशाह के दरबारी गुणराज द्वारा भीषण अकाल में अपनी सम्पत्ति जनता की सहायता के लिए खर्च करने का उल्लेख है।
- इस प्रशस्ति का रचनाकार चरित्ररत्न गणि तथा उत्कीर्णकर्ता नारद था।

बिजौलिया शिलालेख :-

बिजौलिया शिलालेख
- → 1170. ई. में
- →
- → पार्श्वनाथ मंदिर - जैन श्रावक लोलक द्वारा
- → चौहानों को वस्तगोत्रिय ब्रह्माण बताया

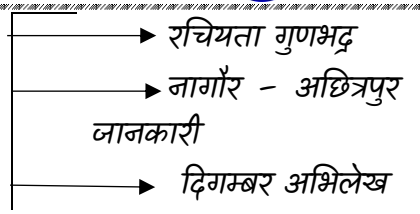

जानकारी
- रचियता गुणभद्र
- नागौर – अछित्रपुर
- दिगम्बर अभिलेख

- 1170 ई. का यह शिलालेख बिजौलिया के पार्श्वनाथ मंदिर के पास एक चट्टान पर जैन श्रावक लोलाक द्वारा बनवाया गया।
- इस शिलालेख में सांभर तथा अजमेर के चौहानों को वत्सगौत्रीय ब्राह्मण बताया गया है तथा उनके वंशक्रम एवं उपलब्धियों का उल्लेख किया गया है।
- इस शिलालेख का रचयिता गुणभद्र था। इसमें 93 संस्कृत पद्य है। इस शिलालेख के लेखक कायस्थ केशव एवं उत्कीर्णकर्त्ता गुणभद्र है ।
- इस लेख में मेवाड़ में बहने वाली कुटिला नदी का उल्लेख है।
- इस अभिलेख में वासुदेव द्वारा शाकंभरी में चौहान वंश की स्थापना करने तथा सांभर झील बनवाने का उल्लेख है। इसके अनुसार वासुदेव ने अहिछत्रपुर (नागौर) को अपनी राजधानी बनाया।
- इस लेख में कई क्षेत्रों के प्राचीन नाम दिये गये हैं - जैसे -जाबालिपुर (जालौर), श्रीमाल (भीनमाल), शाकंभरी (सांभर) आदि।
- यह मूलतः दिगम्बर लेख है।

बुचकला शिलालेख (815 ई.) :-
- बुचकला गाँव (जोधपुर) जिले में बिलाड़ा तहसील के समीप पार्वती मंदिर में स्थित इस शिलालेख से प्रतिहार शासक वत्सराज के पुत्र नागभट्ट के बारे में जानकारी मिलती है।
- यह लेख संस्कृत भाषा में लिपिबद्ध है ।

हस्तिकुण्डी शिलालेख (996 ई.) :-
- सिरोही जिले से प्राप्त इस शिलालेख के रचयिता सूर्याचार्य थे। इस शिलालेख की खोज कैप्टन बर्स्ट ने की।
- इसमें चौहान प्रमुख हरिवर्मा, उसकी पत्नी 'रची' तथा विधग्ध मम्मट व धवल की उपलब्धियों की जानकारी मिलती है।

अपराजित का शिलालेख (661 ई.) :-
- इस शिलालेख की भाषा संस्कृत एवं लिपि कुटिल है। यह शिलालेख वर्तमान में उदयपुर में विक्टोरिया हॉल के संग्रहालय में सुरक्षित है।
- इस लेख की रचना ब्रह्मचारी के पुत्र दामोदर ने की थी ।

चीरवा का शिलालेख :-
- 1273 ई. का यह शिलालेख उदयपुर के चीरवा गाँव में एक मंदिर के बाहरी द्वार पर नागरी लिपि में उत्कीर्ण है।
- इस लेख में गुहिल वंश के प्रारम्भिक शासकों की उपलब्धियों के बारे में जानकारी मिलती हैं/
- इस लेख में जैत्रसिंह, समरसिंह एवं तेजसिंह आदि को प्रतापी शासक बताया गया है।
- इस शिलालेख का रचयिता रत्नप्रभ सूरी तथा उत्कीर्णकर्ता पार्श्वचंद्र था।

चित्तौड़ का शिलालेख (1278 ई.) :-
- 1278 ई. के इस लेख में मेवाड़ के गुहिल शासकों की धार्मिक सहिष्णुता की नीति का उल्लेख मिलता है।
- इस लेख में राज परिवार द्वारा जैन मंदिर के निर्माण के लिए दान देने का उल्लेख किया गया है।
- इस शिलालेख से तेजसिंह की रानी जयतल्ल देवी ने चित्तौड़ में श्याम पार्श्वनाथ मंदिर का निर्माण करवाया था ।

खजूरी गाँव का शिलालेख (1506 ई.):-
- कोटा जिले के खजूरी गाँव से प्राप्त यह शिलालेख बूँदी के राजाओं के बारे में जानकारी प्रदान करता है।

कुंभलगढ़ शिलालेख (1460 ई.):-
- 1460 ई. को यह लेख चित्तौड़गढ़ स्थित कुंभश्याम मंदिर में उत्कीर्ण है जिसका रचयिता महेश था। कुछ इतिहासकार इस शिलालेख के रचयिता कान्हा व्यास को मानते हैं।
- इस शिलालेख की भाषा संस्कृत एवं लिपि नागरी थी।

जगन्नाथ राय प्रशस्ति :-

- 1652 ई. की यह प्रशस्ति उदयपुर के **"जगन्नाथराय मंदिर"** में काले पत्थर पर उत्कीर्ण की गई है।
- इस प्रशस्ति के रचयिता **कृष्णभट्ट** का भी विस्तृत वर्णन है।
- इस प्रशस्ति में मेवाड़ शासक रावल बापा से महाराणा साँगा तक के शासकों की उपलब्धियाँ अंकित है।
- इसमें हल्दीघाटी का युद्ध तथा महाराणा जगतसिंह के काल का विस्तृत उल्लेख किया गया है।
- यह मंदिर गूगावत पंचोली कमल के पुत्र अर्जुन की निगरानी और भंगोरा गोत्र के सूत्रधार भाणा और उसके पुत्र मुकुन्द की अध्यक्षता में बनाई गई थी।

राज प्रशस्ति (1676 ई.) :-

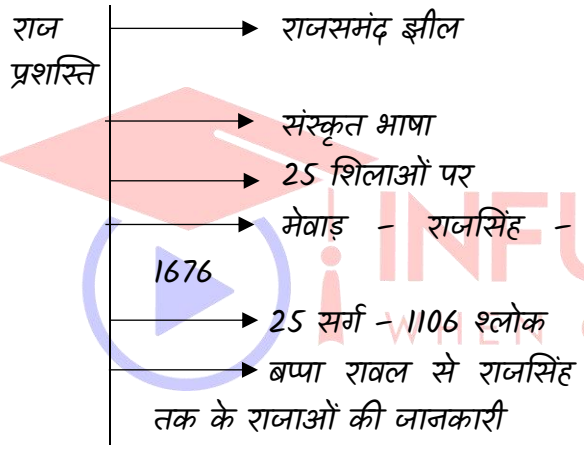

- यह प्रशस्ति राजसमंद झील की नौ चौकी पाल पर ताकों में लगी 25 काली शिलाओं पर संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण है।
- यह विश्व की सबसे बड़ी प्रशस्ति है जिसके रचयिता "रणछोड़ भट्ट तैलंग" थे।
- यह प्रशस्ति मेवाड़ शासक राजसिंह द्वारा 1676 ई. में स्थापित करवाई गई।
- इस प्रशस्ति में अकाल राहत कार्यों के तहत राजसमंद झील के निर्माण का उल्लेख है।
- इस प्रशस्ति में बापा रावल के लिए बाप्प शब्द का प्रयोग हुआ है। इस प्रशस्ति को राजसिंह प्रशस्ति महाकाव्य की संज्ञा दी गई है।
- इस प्रशस्ति में बापा से लेकर राजसिंह तक के शासकों की वंशावली तथा उनकी उपलब्धियों का उल्लेख है।
- इस प्रशस्ति में हल्दीघाटी युद्ध, अमरसिंह द्वारा मुगलों से की गई संधि तथा राजसिंह की विजयों का वर्णन किया गया है।
- इस प्रशस्ति में कुल 25 सर्ग तथा 1106 श्लोक उत्कीर्ण है।
- इस प्रशस्ति में राजसिंह द्वारा किशनगढ़ की **राजकुमारी चारुमति** से विवाह, औरंगजेब के साथ उनके संबंध, उनकी मृत्यु तथा उनके उत्तराधिकारी जयसिंह द्वारा औरंगजेब के साथ संधि करने का विवरण मिलता है।

वैद्यनाथ मंदिर की प्रशस्ति :-

- 1719 ई. की यह प्रशस्ति पिछोला झील के निकट सीसारमा गाँव के वैद्यनाथ मंदिर में उत्कीर्ण की गई है जिसका रचयिता रूपभट्ट था।
- इसमें बापा के हारीत ऋषि की कृपा से राज्य प्राप्ति का उल्लेख है।
- इस प्रशस्ति में बापा से महाराजा संग्रामसिंह द्वितीय जिसने यह मंदिर बनवाया था, तक का संक्षिप्त इतिहास वर्णित है।
- इसमें महाराणा संग्राम सिंह II तथा रणबाज खाँ के मध्य हुए बाँदनवाड़ा युद्ध का उल्लेख मिलता है।

त्रिमुखी बावड़ी की प्रशस्ति :-

- 1675 ई. की यह प्रशस्ति देबारी स्थित त्रिमुखी बावड़ी पर उत्कीर्ण है।
- इस प्रशस्ति में राजसिंह की रानी रामरसदे द्वारा देबारी में **जया** नामक बावड़ी (त्रिमुखी बावड़ी) बनवाने का उल्लेख है।
- इसमें बापा से महाराणा राजसिंह तक के शासकों की वशांवली अंकित है।
- राजसिंह द्वारा बनवाये गये सर्व ऋतुविलास बाग, मालपुरा की विजय, चारुमती से विवाह आदि का भी उल्लेख है।

बेड़वास गाँव की प्रशस्ति (1668 ई.) :-

- बेड़वास गाँव की बावड़ी में लगी यह प्रशस्ति महाराणा राजसिंह के समय की है जो मेवाड़ी भाषा में उत्कीर्ण है।
- इस प्रशस्ति में **देशदाण** (देश, नगर, गाँव, आदि की सीमा पर लगने वाली चुंगी) एवं **उभेदण्ड** (लूट

सिरोही के सिक्के :-

- यहाँ पर मेवाड़ का चाँदी का 'भीलाड़ी' सिक्का तथा मारवाड़ का ताँबे का 'ढब्बूशाही' सिक्का प्रचलित था।
- यहाँ पर चाँदी का 'भीलाड़ी' सिक्का भी प्रचलित था।

अलवर राज्य के सिक्के :-

- अलवर राज्य की टकसाल 'राजगढ़' में स्थापित थी।
- यहाँ पर 1876 ई. तक बने सिक्के रावशाही कहलाते थे।
- यहाँ के ताँबे के सिक्कों को 'रावशाही टक्का' कहा जाता था।
- बनेसिंह के सिक्कों पर 'मुहम्मद बहादुरशाह 1261' अंकित था।

प्रतापगढ़ राज्य के सिक्के :-

- शाहआलम ने महारावल सालिम सिंह को शाहआलम नाम के सिक्के चलवाने की अनुमति दी।
- 1784 ई. से प्रतापगढ़ की टकसाल में चाँदी के सिक्के बनने लगे जिन्हें **'सालिमशाही'** सिक्के कहा गया।
- इन सिक्कों का प्रचलन डूंगरपुर, बाँसवाड़ा, झालावाड़, उदयपुर, रतलाम, निम्बाहेड़ा, जावर, ग्वालियर, मन्दसौर आदि में था।
- 1818 के बाद इन सिक्कों से शाहआलम नाम हटाकर उसके स्थान पर 'सिक्का मुबारिकशाह लंदन, 1236 अंकित किया गया।

डूंगरपुर राज्य के सिक्के :-

- कर्नल निक्सन के अनुसार यहाँ पर चाँदी के 'त्रिशूलिया' एवं 'पत्रिसीरिया' नामक सिक्के बनाये जाते थे।
- डूंगरपुर में मेवाड़ के 'चित्तौड़ी' तथा प्रतापगढ़ के 'सालिमशाही' सिक्के प्रचलित थे।
- वर्ष 1904 में चित्तौड़ी तथा सालिमशाही के स्थान पर 'कलदार' सिक्के का प्रचलन आरम्भ किया गया।

बाँसवाड़ा राज्य के सिक्के :-

यहाँ के सिक्कों के एक ओर 'श्री' के नीचे 'रसायत बाँसवाड़ा' तथा दूसरी ओर हंडी के चित्र का अंकन था।

- महाराजा लक्ष्मणसिंह ने यहाँ पर सोने, चाँदी व ताँबे के सिक्कों का प्रचलन प्रारम्भ किया जिन्हें 'लक्ष्मणशाही' सिक्के कहते हैं।
- 1904 में बाँसवाड़ा राज्य में 'कलदार' का प्रचलन प्रारम्भ हो गया।

रियासत	**प्रचलित सिक्के**
मेवाड़	चित्तौड़ी, भिलाड़ी, सिक्का **एलची**, चांदोड़ी, उदयपुरी, स्वरूपशाही, ढींगला, शाहआलमी, भीडरिया, पारथक्रम।
मारवाड़	भीमशाही, **विजयशाही**, गजशाही, लल्लूलिया, फदिया, गधिया
जयपुर	**झाड़शाही**, मुहम्मदशाही, हाली
बीकानेर	**गजशाही**, आलमशाही (मुगलिया सिक्का)
जैसलमेर	अखैशाही, मुहम्मदशाही, डोडिया (ताँबे के सिक्के)
बूँदी	**कटारशाही**, चेहरेशाही, रामशाही, पुराना रुपया, ग्यारह-सना
डूंगरपुर	त्रिशूलिया, पत्रीसीरिया, उदयशाही, सालिमशाही, चितौड़ी
धौलपुर	**तमंचाशाही**
अलवर	अखैशाही, रावशाही, अंग्रेजी पाव आना सिक्का
झालावाड़	पुराने मदनशाही, नये मदनशाही
सलूम्बर	पदमशाही
बाँसवाड़ा	सालिमशाही , लक्ष्मणशाही
प्रतापगढ़	सालिमशाही, आलमशाही, मुबारकशाही, सिक्का मुबारक लंदन
शाहपुरा	संदिया, चित्तौड़ी, भिलाड़ी, माधोशाही
करौली	माणकशाही, कटार झाड़शाही
किशनगढ़	शाहआलमी, चांदोड़ी सिक्का
कोटा	मदनशाही, हाली, गुमानशाही, **लक्ष्मणशाही**
सिरोही	चाँदी का भिलाड़ी, ताँबें का ढब्बूशाही
नागौर	अमरशाही

7.	हुमायूँनामा	गुलबदन बेगम (हुमायूँ की बहन)	इस ग्रंथ से हुमायूँ के मेवाड़ एवं मारवाड़ शासकों के साथ संबंधों एवं शेरशाह सूरी से परास्त होने की जानकारी मिलती है।
8.	अकबरनामा	अबुल फजल	इस ग्रंथ से राजस्थान के मेवाड़, कोटा, जयपुर, सांभर, अजमेर आदि नगरों में अकबर द्वारा करवाये गये कार्य एवं अकबर के साथ राजपूत राजकुमारियों के विवाह की जानकारी मिलती है।
9.	आईने-ए-अकबरी	अबुल फजल	इस ग्रंथ से राजस्थानी वेशभूषा एवं वस्त्रों के नाम एवं राजस्थान में मनाये जाने वाले त्योहारों एवं मुद्राओं के बारे में जानकारी मिलती है।
10.	मुन्तखब-उत-तवारीख	अब्दुल कादिर बदाँयूनी	इस ग्रंथ में हल्दीघाटी युद्ध का सजीव वर्णन मिलता है। इस ग्रंथ से हमें **हरकू / हरका बाई** का विवाह अकबर के साथ होने का, जौहर प्रथा एवं रक्षाबंधन पर्व का वर्णन मिलता है।
11.	तारीख-ए-शेरशाही	अब्बास खाँ सरवानी	मालदेव एवं शेरशाह के मध्य हुए गिरि-सुमेल युद्ध में लेखक स्वयं मौजूद था।
12.	इकबालनामा	मोतमिद खाँ	इस ग्रंथ में शाहजहाँ द्वारा मेवाड़ में की गई हत्याओं एवं आर्थिक बर्बादी की जानकारी मिलती है।
13.	शाहजहाँ नामा	इनायत खाँ	इस ग्रंथ में मुग़ल मेवाड़ संधि की जानकारी मिलती है।
14.	तारीख-ए-राजस्थान	कालीराम कायस्थ (अजमेर)	इस ग्रंथ को **'नसबुल अनसाब'** के नाम से भी जाना जाता है।
15.	तबकात-ए-अकबरी	निजामुद्दीन अहमद	यह ग्रंथ शेरशाह की सेना के टुकड़ी के नागौर पहुँचने की जानकारी प्रदान करता है ।
16.	फतूहात-ए-आलमगीरी	ईसरदास नागर	इस ग्रंथ से **दुर्गादास राठौड़** की कूटनीतिज्ञता का पता चलता है ।
17.	तुजुक-ए-जहाँगीरी	जहाँगीर	यह जहाँगीर की आत्मकथा है जिसमें आमेर के राजा । भगवन्तदास का नाम भगवानदास लिखा है।
18.	तजकिरात-उल-वाकेयात	जौहर आफतावची	
19.	तारीख-ए-रशीदी	मिर्जा हैदर दोगलत	
20.	पादशाहनामा	अब्दुल हमीद लाहौरी	
21.	आलमगीरनामा	मोहम्मद काजिम	
22.	मुनव्वर-ए-कलाम	**शिवदास**	

<u>पुरालेखीय स्रोत :</u>

इन स्रोतों में शासकीय एवं अर्द्धशासकीय आदेश, पत्र, हिसाब, बहियाँ आदि प्रशासनिक कार्यों से जुड़ी लिखित सामग्री के साथ-साथ गैर प्रशासनिक संस्थाओं एवं व्यक्तिगत दस्तावेजों का समावेश शामिल है।

राजस्थान में पुरालेख सामग्री तीन भाषाओं में लिपिबद्ध मिलती हैं :- 1. फारसी 2. राजस्थानी एवं हिन्दी 3. अंग्रेजी

सिक्के

- मेवाड़ - चितौड़ी, भिलाड़ी, उदयपुरी, मुग्ली एलची, चांदौड़ी, स्वसणशाही, शाहआलमी

  जोधपुर – विजयशाही,भीमशाही, गजशाही, लल्लुलिया

  जयपुर - झाड़शाही, मुहमदशाही, हाली, गधिया

  बीकानेर – गजशाही

  जैसलमेर –अखैशाही, मुहमदशाही , डोडिया

  डूंगरपूर- उदयशाही

  बूंदी – रामशाही, कटारशाही, ग्यारह –सना

  धौलपुर – तमंचाशाही

  अलवर –अखैशाही, रावशाही

  सलूम्बर- पदमशाही

  करौली- माणकशाही

  कोटा – मदनशाही, गुमानशाही

तामपत्र

आहड़ (1206) – गुजरात

खेराद (1437)- राणा कुंभा द्वारा दान

चिकली (1483)- किसानों से ली जाने वाली लगान

पुर (1535) – कर्मावती द्वारा जौहर पूर्व दान

मुण्डीयार री ख्यात का विषय मारवाड़ के चौहान है

अभ्यास प्रश्न

1. दिए गये शिलालेखों / प्रशस्तियों को उनके समय के अनुसार (पहले से बाद में) क्रमबद्ध करें ।

a. मंडोर का बाउक का शिलालेख
b. सांडेराव के महावीर जैन मंदिर का अभिलेख
c. चितौड़ का शिलालेख
d. आहड़ के आदिवराह मंदिर से प्राप्त शिलालेख

a. a, c, b,d b. d, a, b,c
c. a, d, b,c d. d,a,c, b

उत्तर :- c

2. पदमशाही मुद्रा कहाँ प्रचलित थी ?

(a) शाहपुरा (b) किशनगढ़
(c) सलूम्बर (d) ब्यावर

उत्तर :- c

3. राज्य में प्राप्त एक मध्यकालीन प्रशस्ति के संबंध में निम्न कथनों पर गौर कीजिए

I. यह 17वीं शताब्दी में महाराजा राजसिंह द्वारा स्थापित कराई गई।
II. इसमें राजसमंद झील का निर्माण अकाल राहत कार्यों के तहत किए जाने का उल्लेख है।
III. यह भारत का सबसे बड़ा शिलालेख है। उक्त प्रशस्ति कौनसी है?

(a) राज प्रशस्ति
(b) सामोली का शिलालेख
(c) नाथ प्रशस्ति
(d) चीखा का लेख

उत्तर :- a

4. डोडिया तथा अवैशाही सिक्का का प्रचलन कहाँ पर था ?

(a) बीकानेर (b) जोधपुर
(c) पाली (d) जैसलमेर

उत्तर :- d

अध्याय – 2

प्रागैतिहासिक स्थल (प्राचीन सभ्यताएं)

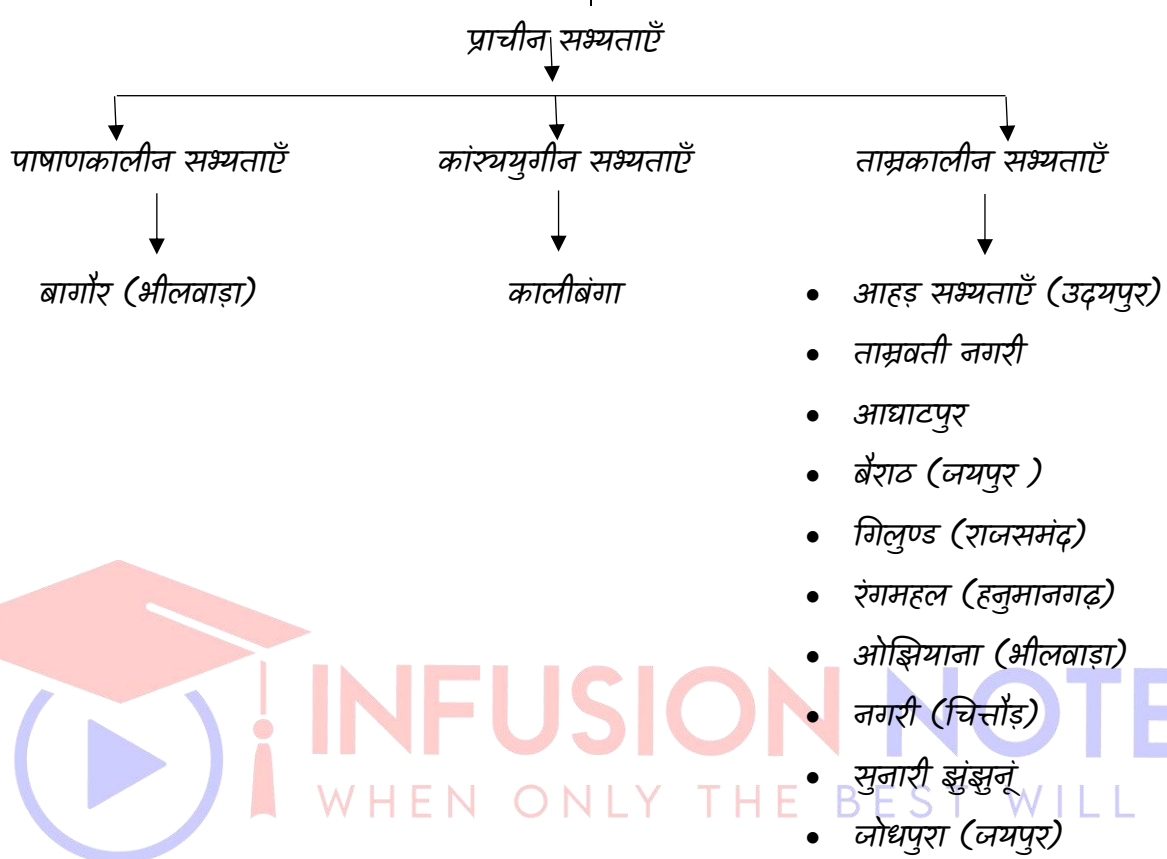

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- **पाषाणकालीन सभ्यता**

I. बागौर (भीलवाड़ा)

प्रिय छात्रों किसी भी सभ्यता का विकास किसी नदी के किनारे होता है क्योंकि जल ही जीवन है जल की आवश्यकता खेती के लिए और अन्य उपयोगों के लिए की पड़ती है।

- इसी प्रकार भीलवाड़ा जिले की माण्डल तहसील में कोठारी नदी के तट पर स्थित इस पुरातात्विक स्थल का उत्खनन 1967-68 से 1969-70 की अवधि में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग एवं दक्कन कॉलेज, पुणे के तत्त्वावधान में श्री वी.एन. मिश्र एवं डॉ. एल.एस. लेशनि के नेतृत्व में हुआ है
- यहाँ से मध्य पाषाणकालीन (Mesolithic) लघु पाषाण उपकरण व वस्तुएँ (Microliths) प्राप्त हुई हैं।
- बागौर के उत्खनन में प्राप्त प्रस्तर उपकरण काल विभाजन के क्रम से तीन चरणों में विभाजित किये गये हैं। प्रथम चरण 3000 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर 2000 वर्ष ईसा पूर्व तक, द्वितीय चरण 2000 वर्ष ईसा पूर्व से 500 वर्ष ईसा पूर्व का एवं तृतीय चरण 500 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर प्रथम ईस्वी सदी तक की मानव सभ्यता की कहानी कहता है ।
- इन पाषाण उपकरणों को **स्फटिक** (Quartz) एवं चर्ट पत्थरों से बनाया जाता था। इनमें मुख्यतः पृथुक (Flake), फलक (Blade) एवं अपखण्ड (Chip) बनाये जाते थे। ये उपकरण आकार में बहुत छोटे (लधु अश्म उपकरण- Microliths) थे।
- बागौर में उत्खनन में पाषाण उपकरणों के साथ-साथ एक मानव कंकाल भी प्राप्त हुआ है।
- यहाँ पाये गये लघु पाषणा उपकरणों में ब्लेड, छिद्रक, स्क्रेपर, बेधक एवं चांद्रिक आदि प्रमुख हैं।

- ये पाषाण उपकरण चर्ट, जैस्पर, चाल्डेसनी, एगेट, क्वार्टजाइट, फ्लिंट जैसे कीमती पत्थरों से बनाये जाते थे। ये आकार में बहुत छोटे आधे से पौंने इंच के औजार थे ये छोटे उपकरण संभवत: किसी लकड़ी या हड्डी के बड़े टुकड़ों पर आगे लगा दिये जाते थे।
- इन्हें मछली पकड़ने, जंगली जानवरों का शिकार करने, छीलने, छेद करने आदि कार्यों में प्रयुक्त किया जाता था। इन उपकरणों से यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय आखेट करना एवं कंद-मूल फल एकत्रित करने की स्थिति पर प्रकाश पड़ता है।
- यहाँ के प्रारंभिक स्तरों पर घर या फर्श के अवशेष नहीं मिलना साबित करता है कि यहाँ का मानव घुमक्कड़ जीवन जीता होगा।
- बागौर में द्वितीय चरण के उत्खनन में केवल 5 ताम्र उपकरण मिले हैं, जिसमें एक सूई (10.5 सेमी लम्बी), एक कुन्ताग्र (Spearhead), एक त्रिभुजाकार शस्त्र, जिसमें दो छेद हैं, प्रमुख हैं ।
- इस चरण के उत्खनन में मकानों के अवशेष भी मिले हैं जिससे पुष्टि होती है कि इस समय मनुष्य ने एक स्थान पर स्थायी जीवन जीना प्रारम्भ कर दिया था।
- इस काल की प्राप्त हड्डियों में गाय, बैल, मृग, चीतल, बारहसिंघा, सूअर, गीदड़, कछुआ आदि के अवशेष मिले हैं।
- कुछ जली हुई हड्डियाँ व मांस के भुने जाने के प्रमाण मिलने से अनुमान है कि इस काल का मानव मांसाहारी भी था तथा कृषि करना सीख चुका था।
- उत्खनन के तृतीय चरण में हड्डियों के अवशेष बहुत कम होना स्पष्ट करता है कि इस काल (500 ई. पूर्व से ईसा की प्रथम सदी) में मानव संस्कृति में कृषि की प्रधानता हो गई थी ।
- **बागौर उत्खनन** में कुल **5 कंकाल** प्राप्त हुए हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि शव को दक्षिण पूर्व-उत्तर पश्चिम में लिटाया जाता था तथा उसकी टांगे मोड़ दी जाती थी।
- सभ्यता के तृतीय चरण में शव को उत्तर-दक्षिण में लिटाने एवं टांगे सीधी रखने के प्रमाण मिले हैं।
- शव को मोती के हार, ताँबे की लटकन, मृद्भाण्ड, मांस आदि सहित दफनाया जाता था। खाद्य पदार्थ व पानी हाथ के पास रखे जाते थे तथा अन्य वस्तुएँ आगे-पीछे रखी जाती थी।
- तृतीय चरण के एक कंकाल पर ईंटों की दीवार भी मिली है, जो समाधि बनाने की द्योतक है। मिट्टी के बर्तन यहाँ के द्वितीय चरण एवं तृतीय चरण के उत्खनन में मिले हैं।
- द्वितीय चरण के मृद्भाण्ड मटमैले रंग के, कुछ मोटे व जल्दी टूटने वाले थे। इनमें शरावतनें, तश्तरियाँ, कटोरे, लोटे, थालियाँ, तंग मुँह के घड़े व बोतलें आदि मिली हैं। (ये मृद्भाण्ड रेखा वाले तो थे परन्तु इन पर अलंकरणों का अभाव था।
- ऊपर से लाल रंग लगा हुआ है। ये सभी हाथ से बने हुए हैं) (तृतीय चरण के मृद्भाण्ड पतले एवं टिकाऊ हैं तथा चाक से बने हुए हैं। इन पर रेखाओं के अवशेष मिले हैं, परन्तु अलंकरण बहुत कम मिले हैं।
- (आभूषण: बागौर सभ्यता में मोतियों के आभूषण तीनों स्तरों के उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे।
- ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे। मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे। ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे।)
- **मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण** में प्राप्त हुए हैं। मकान पत्थर के बने हैं। फर्श में भी पत्थरों को समतल कर जमाया जाता था।

- बागौर में मध्यपाषाणकालीन पुरावशेषों के अलावा लौह युग के उपकरण भी प्राप्त हुए हैं। इस सभ्यता के प्रारंभिक निवासी आखेट कर अपना जीवन यापन करते थे। परवर्ती काल में वे पशुपालन करना सीख गये थे। बाद में उन्होंने कृषि कार्य भी सीख लिया था।

कांस्ययुगीन सभ्यताएं –

2. कालीबंगा की सभ्यता –

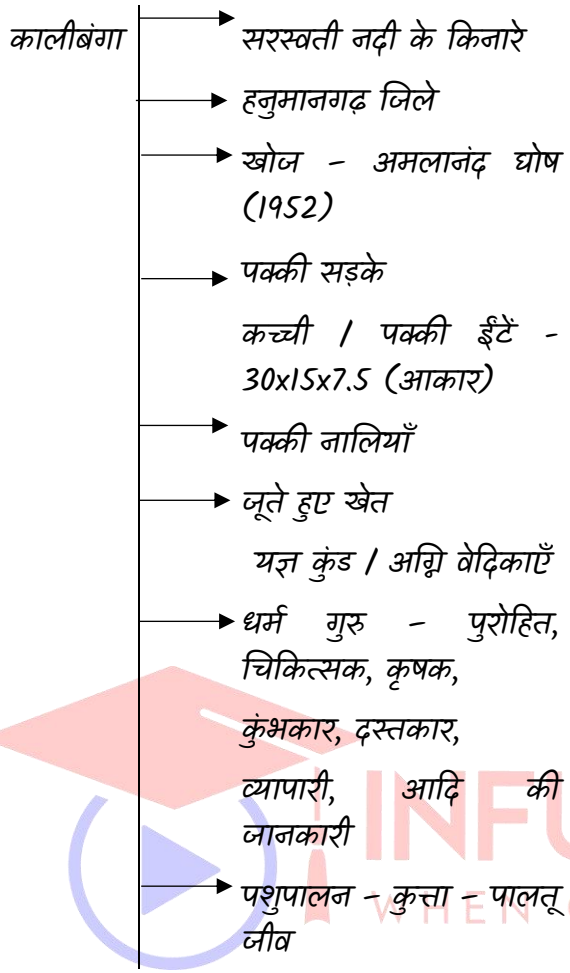

- कालीबंगा की सभ्यता एक नदी के किनारे बसी हुई थी। नदी का नाम है – **सरस्वती नदी**। इसे **द्वेषनदी, मृतनदी, नटनदी** के नाम से भी जानते हैं।

  यह सभ्यता हनुमानगढ़ जिले में विकसित हुई थी हनुमानगढ़ जिले में एक अन्य सभ्यता जिसे **पीलीबंगा** की सभ्यता कहते हैं विकसित हुई।

इस सभ्यता की खोज –

- इस सभ्यता की सबसे पहले जानकारी देने वाले एक पुरातत्ववेत्ता एवं भाषा शास्त्री एल.पी. टेस्सिटोरी थे। इन्होंने ही इस सभ्यता के बारे में सबसे पहले परिचय दिया लेकिन इस सभ्यता की तरफ किसी का पूर्णरूप से ध्यान नहीं था इसलिए इसकी खोज नहीं हो पाई।
- इस सभ्यता के खोजकर्ता **अमलानंद घोष** हैं। इन्होंने 1952 में सबसे पहले इस सभ्यता की खोज की थी।
- इनके बाद में इस सभ्यता की खोज दो अन्य व्यक्तियों के द्वारा भी की गई थी जो 1961 से 1969 तक चली थी।

1. **बृजवासीलाल (बी.बी. लाल)**
2. **बीके (बालकृष्ण) थापर**

इन्हीं दोनों ने इस सभ्यता की विस्तृत रूप से खोज की थी

एल.पी. टेस्सिटोरी के बारे में –

- ये इटली के के निवासी थे। इनका जन्म सन् 1887 में हुआ। और यह अप्रैल 1914 ईस्वी में भारत मुंबई आए। जुलाई 1914 में यह जयपुर (राजस्थान) आये। बीकानेर राज्य इनकी कर्म स्थली रहा है।
- उस समय के तत्कालीन राजा महाराजागंगा सिंह जी ने इन्हें अपने राज्य के सभी प्रकार के चारण साहित्य लिखने की जिम्मेदारी दी।
- बीकानेर संग्रहालय भी इन्होंने ही बनवाया है ये एक भाषा शास्त्री एवं पुरातत्ववेत्ता थे उन्होंने राजस्थानी भाषा के दो प्रकार बताए थे।

1. पूर्वी राजस्थानी 2. पश्चिमी राजस्थानी

- इस सभ्यता का कालक्रम **कार्बन डेटिंग पद्धति** के अनुसार 2350 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व माना जाता है।
- कालीबंगा शब्द "सिंधीभाषा" का एक शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है – **"काले रंग की चूड़िया"**। इस स्थल से काले रंग की चूड़ियों के बहुत सारी ढेर प्राप्त हुए इसलिए इस सभ्यता को कालीबंगा सभ्यता नाम दिया गया।
- कालीबंगा की सभ्यता भारत की ऐसी पहली सभ्यता स्थल है जो **स्वतंत्रता के बाद खोजी** गई थी। यह एक **कांस्य युगीन सभ्यता** है।
- हनुमानगढ़ जिले से इस सभ्यता से संबंधित जो भी वस्तुएं प्राप्त हुई हैं उनको सुरक्षित रखने के लिए राजस्थान सरकार के द्वारा **1985-86 में कालीबंगा संग्रहालय** की स्थापना की गई थी। यह संग्रहालय **हनुमानगढ़** जिले में स्थित है।

अभ्यास प्रश्न

1. "ए सर्वे वर्क ऑफ एनशिएन्ट साइट्स अलोंग दी लोस्ट सरस्वती रिवर" किसका कार्य था?

(a) एम. आर. मुगल (b) ओरैल स्टैन
(c) हरमन गोइट्ज (d) वी. एन. मिश्रा
उत्तर :- b

2. प्राचीन सरस्वती नदी के किनारे बसी राजस्थान की सबसे प्राचीन सभ्यता कौनसी हैं?

(a) कालीबंगा (b) आहड़
(c) गिलूण्ड (d) गणेश्वर
उत्तर :- a

3. निम्नांकित में से किस इतिहासवेत्ता ने कालीबंगा को सिंधु घांटी साम्राज्य की तृतीय राजधानी कहा हैं?

(a) जी. एच. ओझा (b) श्यामल दास
(c) दशरथ शर्मा (d) दयाराम साहनी
उत्तर :- c

4. राजस्थान की किस सभ्यता को ताम्रयुगीन सभ्यता की जननी कहते हैं?

(a) नागौर (b) गिलूण्ड
(c) आहड़ (d) गणेश्वर
उत्तर :- d

5. प्राचीन भारत के टाटानगर के नाम से विख्यात सभ्यता हैं?

(a) तिलवाड़ा (b) नलियासर
(c) जोधपुरा (d) रैढ़
उत्तर :- d

6. मालव सिक्के व आहत मुद्राएँ किस सभ्यता के अवशेष हैं?

(a) जोधपुरा (b) रैढ़
(c) नगर (मालव नगर) (d) नलियासर
उत्तर :- c

7. कान्तली नदी के किनारे स्थित गणेश्वर की सभ्यता का उत्खनन किसके नेतृत्व में हुआ?

(a) आर.सी. अग्रवाल व एच.एम. साँकलिया
(b) आर.सी. अग्रवाल व अमलानंद घोष
(c) आर.सी. अग्रवाल व विजयकुमार
(d) आर.सी. अग्रवाल व अक्षय कीर्ति व्यास
उत्तर :- B

8. इनमें से कौनसा स्थल लौहयुगीन सभ्यता से सम्बन्धित नहीं हैं?

(a) डेरा (b) जोधपुरा
(c) विराटनगर (d) आहड़
उत्तर :- D

9. निम्न में से कौन कालीबंगा सभ्यता से सम्बन्धित नहीं हैं-

(a) अमलानंद घोष (b) बी.बी. लाल
(c) बी.के. थापर (d) आर.सी. अग्रवाल
उत्तर :- D

10. एक घर में एक साथ छः चूल्हे किस पुरातात्विक स्थल में प्राप्त हुए हैं?

(a) कालीबंगा (b) आहड़
(c) गिलूण्ड (d) बागोर
उत्तर :- b

कराया । समर सिंह के शासनकाल 1273 ई. से 1302 ई. के बीच था । रावल समर सिंह के दो पुत्र थे रतन सिंह व कुंभकर्ण । रावल सिंह मेवाड़ का उत्तराधिकारी बना जबकि **कुंभकर्ण** ने नेपाल में गुहिल सत्ता की स्थापना की।

- समरसिंह के शासन काल में उसके पुत्र कुंभकर्ण ने नेपाल में गुहिल वंश की स्थापना की तथा दूसरे पुत्र रतनसिंह ने चित्तौड़ पर शासन किया।

रतन सिंह (1302-1303)

- रावल समरसिंह के पश्चात् रावल रतनसिंह ने मेवाड़ का शासक बना
- इसका शासनकाल 1302 ई.- 1303 ई. तक का था।
- रावल रतन सिंह रावल शाखा का अंतिम शासक था।
- इनका दरबारी विद्वान राघव चेतन था।

रानी पद्मिनी –

- रानी पद्मिनी सिंहल द्वीप (श्रीलंका) के राजा गंधर्वसेन व रानी चंपावती की पुत्री थी।
- पद्मिनी की सुन्दरता का बखान हीरामन जाति का तोता करता था।
- रानी पद्मिनी रतनसिंह का गधर्व विवाह हुआ।
- पद्मिनी व रतनसिंह के विवाह के पश्चात् गौरा (रानी पद्मिनी के चाचा) - बादल (रानी पद्मिनी के भाई) व 1600 महिलाऐं पद्मिनी के साथ मेवाड़ आई।
- राघव चेतन एक जाना - माना तांत्रिक था जिसका पता चलने पर रतनसिंह ने राघव चेतन को मेवाड़ छोड़ने का आदेश दिया।
- तत्पश्चात् राघव चेतन अल्लाउद्दीन खिलजी की शरण में गया।
- अलाउद्दीन को पद्मिनी की जानकारी राघव चेतन ने दी । (पद्मावत ग्रन्थ के अनुसार)

अल्लाउद्दीन खिलजी के आक्रमण के कारण –

- अल्लाउद्दीन खिलजी की साम्राज्यवादी व महत्वकांक्षी नीति।
- चित्तौड़ का मालवा तथा गुजरात के बिच में पड़ना (यह आक्रमण करने का सबसे प्रभावी कारण था)
- रानी पद्मिनी की प्रबल आकांक्षा (मलिक मोहम्मद जायसी के ग्रन्थ पद्मावत के अनुसार)
- डॉ. दशरत शर्मा के अनुसार चित्तौड़गढ़ पर आक्रमण का मुख्य कारण दुर्ग का सामरिक महत्व था।
- अल्लाउद्दीन खिलजी की सेना आक्रमण हेतु 28 जनवरी 1303 को रवाना हुई जबकि अल्लाउद्दीन खिलजी को 26 अगस्त, 1303 को चित्तौड़ पर विजय प्राप्त हुई।
- अल्लाउद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय रावल रतनिसंह के सेनापति गौरा-बादल (चाचा-भतिजा) थे
- गौरा-बादल ने केसरिया किया और अपने शौर्य का परिचय देते हुए रतनसिंह और गौरा व बादल लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।
- इधर चित्तोड़ गढ़ दुर्ग में अल्लाउद्दीन खिलजी से अपने बचाव के लिए रानी पद्मिनी ने 1600 महिलाओं के साथ 26 अगस्त 1303 को जौहर किया।

चित्तौड़गढ़ का प्रथम शाका – 1303 ई.

केशरिया – रावल रतनसिंह के नेतृत्व में हुआ

जोहर – रानी पद्मिनी के नेतृत्व में हुआ

- अल्लाउद्दीन खिलजी ने चित्तोड़ गढ़ का नाम खिज्राबाद रख कर इसे अपने पुत्र खिज्र खा को सौंप दिया। खिजरा खा ने चित्तोड़ पर 1303 ई. - 1313 ई. तक शासन किया।
- ग्रन्थ पद्मावत में इस युद्ध में रतनिसंह को हृदय, पद्मिनी की बुद्धि व अलाउद्दीन को माया की संज्ञा दी गई है।
- चित्तौड़ विजय के पश्चात् अल्लुद्दीन खिलजी ने गंभीरी नदी पर बांध बनवाया।
- चित्तौड़गढ़ में था बाई पीर की दरगाह पर शिलालेख लिखवाया।
- सिसोदा ठिकाने के सामंत लक्ष्मण ने सिंह चित्तोड़ किले रक्षा में अपने 7 पुत्रो सहित अपना बलिदान दिया।

- **Note – 1303 के आक्रमण के बाद।**
- लेकिन गौरीशंकर हीराचंद ओझा इस घटना को काल्पनिक बताते हैं और आक्रमण (यह आक्रमण 1303 वाला नहीं हैं) का कारण अल्लाउद्दीन खिलजी का गुजरात तक अधिकार करने की लालसा बताते हैं जबकि गोपीनाथ शर्मा इस आक्रमण को काल्पनिक नहीं वास्तविक मानते हैं
- पद्मावत ग्रन्थ – 1540 ई. में शेरशाह सूरी के शासनकाल में अवधी भाषा में पद्मावत ग्रन्थ की रचना मालिक मुहम्मद जायसी द्वारा की गई।
- खजाइन उल फतुह या तारीख ए अलाइ – इसका रचनाकार आमिर खुशरो था जो अल्लाउद्दीन के सैनिक अभियान में साथ था। इस ग्रन्थ में आमिर खुशरो ने अल्लाउद्दीन खिलजी की चित्तौड़ विजय का सजीव वर्णन किया
- तारीख ए फरिश्ता – इसका लेखक फरिश्ता पद्मिनी को रावल रतन सिंह की पुत्री बताता हैं।
- 1313 ई. 1320 ई. तक चित्तौड़ शासक मालदेव (जालौर शासक कान्हड़देव का भाई) रहा।
- मालदेव ने सिसोदा सामन्त हम्मीर के साथ अपनी पुत्री का विवाह किया।
- 1320 ई.-1326 ई. तक चित्तौड़गढ़ पर जैसासिंह का अधिकार रहा।
- राणा हम्मीर ने जैसासिंह को पराजित कर चित्तौड़गढ़ पर अधिकार किया।

हम्मीर सिंह (1326-64)

- गुहिल वंश की मुख्य शाखा (रावल शाखा) के पतन के सोनगरा चौहानों को पराजित कर हम्मीर सिंह ने **1326 ई.** में मेवाड़ में सिसोदिया राजवंश की नींव रखी। इससे पहले 1303 ई. में रावल रतन सिंह को पराजित कर अलाउद्दीन खिलजी ने राजधानी चित्तौड़गढ़ (मेवाड़) पर अधिकार कर लिया था। अलाउद्दीन खिलजी ने अपने पुत्र खिज्र खाँ को चित्तौड़गढ़ में नियुक्त किया तथा चित्तौड़गढ़ का नाम बदलकर 'खिज्राबाद' कर दिया। 1311 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने जालौर के दुर्ग पर अधिकार कर लिया। जालौर के शासक कान्हड़ देव सोनगरा चौहान व उसके पुत्र वीरमदेव युद्ध में वीरगति को प्राप्त हए । लेकिन कान्हड़ देव के भाई मालदेव सोनगरा चौहान ने अलाउद्दीन खिलजी की अधीनता स्वीकार कर ली थी जिस कारण उसे जीवित छोड़ दिया गया। अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु के मालदेव को चित्तौड़ का प्रशासक नियुक्त कर खिज्र खाँ दिल्ली लौट आया । धीरे-धीरे मेवाड़ में मालदेव ने अपनी स्थिति मजबूत कर ली।
- सिसोदिया वंश के राणा हम्मीर सिंह अरिसिंह के पुत्र तथा लक्ष्मण सिंह के पौते थे। उन्हें मेवाड़ के उद्धारक के रूप में जाना जाता हैं। दिल्ली सल्तनत उन दिनों अस्थिरता के दौर से गुजर रही थी, खिलजी साम्राज्य का पूरी तरह से पतन हो चुका था और अब दिल्ली पर मुहम्मद बिन तुगलक का शासन स्थापित हो चुका था। इसी अस्थिरता का लाभ उठाते हुए राणा हम्मीर सिंह ने 1326 ई. में मालदेव चौहान के पुत्र जैसा/जय सिंह/बनवीर चौहान को पराजित कर मेवाड़ से मुस्लिम सत्ता को उखाड़ फेंका । हम्मीर सिंह ने अपनी सत्ता का केंद्र केलवाड़ा नामक स्थान को बनाया। मुहम्मद बिन तुगलक तथा हम्मीर सिंह के मध्य बाँसवाड़ा में **सिंगोली** नामक स्थान पर युद्ध हुआ । इस युद्ध को सिंगोली का युद्ध भी कहा जाता हैं। हालाँकि इस युद्ध की तिथि के बारे में जानकारी प्राप्त नहीं हैं।
- राणा हम्मीर सिंह को सिसोदिया वंश का प्रथम शासक भी कहा जाता हैं । यहाँ एक बात स्पष्ट हैं, सिसोदिया कोई वंश नहीं हैं, बल्कि यह एक शाखा हैं, जैसे रावल एक शाखा हैं । जबकि ये दोनों शाखाएं गुहिल वंश की हैं । राजा रण सिंह के पुत्र राहप ने सिसोदा गांव बसाया तथा अपनी शासन व्यवस्था यहीं से शुरू की। आगे चलकर इसी शाखा में हम्मीर सिंह का जन्म हुआ। सिसोदा गांव के होने के कारण ये सिसोदिया शाखा के कहलाने लगे। हालांकि सामान्यतः सिसोदिया शाखा को सिसोदिया वंश के नाम से जाना जाता हैं।
- हम्मीर सिंह एक बहुत ही वीर और प्रतापी शासक थे । राणा कुम्भा की कीर्ति स्तंभ प्रशस्ति में हम्मीर सिंह को **विषम घाटी पंचानन** (विकट परिस्थितियों में सिंह के समान) कहा गया हैं जबकि इन्हीं की ही रचना **रसिक प्रिया** की टीका में उन्हें वीर राजा की संज्ञा भी दी गई हैं। हम्मीर सिंह ने चित्तौड़गढ़ दुर्ग में **बरवड़ी माता** का भव्य मंदिर बनवाया जिसे आज अन्नपूर्णा माता मंदिर के नाम से जाना जाता हैं ।

- राणा हम्मीर सिंह ने 1326 ई. से 1364 ई. तक शासन किया। 1364 ई. में हम्मीर सिंह की मृत्यु के उसका पुत्र खेता (क्षेत्र सिंह) अगला शासक बना।
- हम्मीर, बनवीर सोनगरा को हराकर चित्तौड़ पर अपना पुनः अधिकार कर लिया , हम्मीर सिसोदा (राजसमंद) गाँव का था इसलिए यहाँ से गुहिल वंश की सिसोदियाँ शाखा के शासन का प्रारंभ हुआ।
- हम्मीर ने राणा उपाधि का प्रयोग किया। [रावल उपाधि का प्रयोग करने वाला अन्तिम राजा रतन सिंह था।] चूंकि हम्मीर ने चित्तौड़ पर पुनः गुहिल वंश का शासन स्थापित किया इसलिए हम्मीर को यह उपाधि मिली हम्मीर को "मेवाड़ का उद्धारक" कहा जाता है।
- राणा कुम्भा की रसिक प्रिया नामक पुस्तक में हम्मीर को "वीर राजा" बताया गया है।
- बरवड़ी माता मेवाड़ के गुहिल वंश की ईष्ट देवी है और "बाण माता" मेवाड़ के गुहिल वंश की कुल देवी है। सिसोदा गाँव की स्थापना "राहप" ने की थी।

<u>महाराणा क्षेत्रसिंह 1364 – 1382 ई.:-</u>

महाराणा हम्मीर का उत्तराधिकारी उनका **ज्येष्ठ पुत्र क्षेत्र सिंह** बना। इसने अजमेर, मांडल, जहाजपुर, एवं छप्पन के प्रदेशों को विजित किया तथा मालवा के सुल्तान दिलावर खाँ गौरी (मालवा के अमीनशाह के नाम से प्रसिद्ध) परास्त किया। क्षेत्रसिंह ने बूँदी के हाड़ाओं को पराजित कर बूँदी को अपने अधीन किया। तथा ईडर पर आक्रमण कर वहाँ के शासक रणमल को कैद कर लिया। 1382 ई. में क्षेत्रसिंह की मृत्यु हो गई। इसके 7 पुत्र एवं कई औरस पुत्र (जिनमें चाचा व मेरा भी थे हुए।

<u>राणा लाखा (लक्ष सिंह) (1382-1421)</u>

- राणा लाखा के पिता का नाम **राणा क्षेत्र सिंह** था।
- जब राणा लाखा गद्दी पर बैठे, तब मेवाड़ आर्थिक समस्याओं से ग्रसित था, लेकिन लाखा के शासनकाल में ही जावर नामक स्थान पर **चाँदी की खान** निकल आती है जो की एशिया की सबसे बडी चाँदी की खान है, जिससे लाखा की समस्त आर्थिक समस्याएँ हल हो जाती हैं, इसी घटना से राणा लाखा का शासनकाल उन्नति की ओर बढ़ जाता है।
- इनके शासनकाल में **उदयपुर शहर** के बीचों बीच पीछ नामक एक बंजारे ने **पिछोला झील** का निर्माण कराया, यह झील लाखा के शासनकाल में मेवाड़ के लिए पेयजल का एकमात्र साधन रही। राणा लाखा के जीवन का सबसे बड़ा रोचक तथ्य यह था कि इन्होंने अपने जीवन के अन्तिम दिनों में मारवाड़ के राजा राव की राजकुमारी **हंसाबाई** से विवाह किया, लेकिन यह विवाह इस शर्त पर हुआ कि लाखा का ज्येष्ठ पुत्र कुंवर चूँड़ा मेवाड़ राज्य का उत्तराधिकारी नहीं बनेगा, बल्कि लाखा व रानी हंसाबाई से उत्पन्न पुत्र ही मेवाड़ का उत्तराधिकारी होगा, जो कि आगे चलकर महाराणा मोकल हुए। राणा लाखा एक विद्वान शासक होने के साथ-साथ एक प्रसिद्ध संगीतज्ञ भी थे, इनके दरबार में भी दो प्रसिद्ध संगीतज्ञ मेवाड़ दरबार की शोभा बढ़ाते थे जिन्हें **धनेश्वर भट्ट व झोटिंग भट्ट** के नाम से जाने जाते थे।
- "कुम्भा हाड़ा" बूँदी की रक्षा करते हुए मारा गया था।
- राणा लाखा के बड़े बेटे का नाम चूँड़ा था। वहीं दूसरी तरफ उस समय मारवाड़ के राजा का नाम भी चूँड़ा था जिसकी पुत्री राजकुमारी" हंसाबाई" की शादी राणा लाखा से कर दी गयी। इस समय लाखा के बेटे चूँड़ा ने यह प्रतिज्ञा ली कि वह मेवाड़ का अगला राजा नहीं बनेगा बल्कि हंसाबाई का बड़ा बेटा ही मेवाड़ का अगला राजा बनेगा। और यही कारण है कि चूँड़ा को "मेवाड़ का भीष्म" भी कहा जाता है। चूँड़ा के इस त्याग के कारण उसे कुछ विशेष अधिकार दिए गए –
- मेवाड़ के 16 प्रथम श्रेणी के ठिकानों में से 5 ठिकाने चूँड़ा को दिए गए और इन चार ठिकानों में सलुम्बर (उदयपुर) भी शामिल था।
- सलुम्बर का सामन्त मेवाड़ की सेना का सेनापति होगा।
- सलुम्बर का सामन्त मेवाड़ के राजा का राजतिलक करेगा।
- राणा (राजा) की अनुपस्थिति में राजधानी को सलुम्बर का सामन्त ही संभालेगा।
- मेवाड़ के सभी प्रकार के कागजों पर राजा के अतिरिक्त सलुम्बर के सामन्त के भी हस्ताक्षर लिए जायेंगे।

- युद्ध में सेना का जो भाग आगे लड़ता है उसे "हरावल" कहा जाता है जबकि सेना का जो भाग युद्ध में पीछे की तरफ लड़ता है, उसे "चंदावल" कहते हैं।

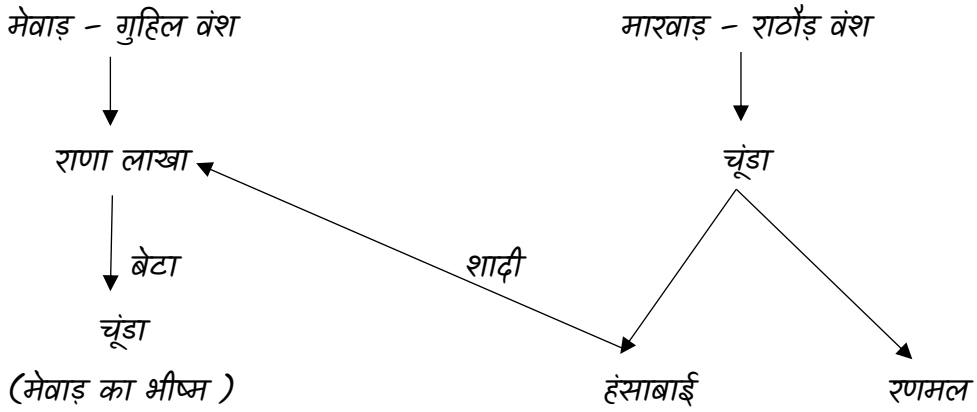

राणा मोकल (1421-1433)

- राणा मोकल मेवाड़ के राणा लाखा तथा (मारवाड़ की राजकुमारी) रानी **हंसाबाई** के पुत्र थे। मेवाड़ राज्य की विषय परिस्थितियों का दौर राणा लाखा की मृत्यु के बाद प्रारंभ हो गया। राणा मोकल को परिस्थितियाँ विरासत के रूप में प्राप्त हुई, क्योंकि इनके पिता लाखा का विवाह मारवाड़ की राजकुमारी हंसाबाई से वृद्धावस्था में हुआ और बहुत जल्द ही राणा लाखा की मृत्यु (1421 ई.)में हो गयी। मृत्यु के मेवाड़ का शासन हंसाबाई व उसके भाई राव रणमल के हाथों में आ गया, कुंवर चूँड़ा अपने अपमान के कारण **मांडू (मध्य प्रदेश)** चला गया, राणा मोकल का शासनकाल 1421 ई.-1433 ई. के बीच माना जाता है। राणा मोकल ने अपनी पुत्री लाला मेवाड़ी का विवाह गागरोन के शासक अचलदास खींची से कर दी। उन्होंने 1428 ई. के रामपुरा युद्ध में नागौर शासक फिरोज खाँ को पराजित किया। मेवाड़ राज्य में राणा मोकल ने हिंदू परम्परा को स्थापित करने के लिए **तुलादान पद्धति** को लागू किया। इस परम्परा के तहत् मंदिरों के लिए सोना-चाँदी दान के रूप में दिया जाता था। महाराणा मोकल ने एकलिंगजी के मंदिर के परकोटे का निर्माण कराया। इसी प्रकार चित्तौड़ में स्थित त्रिभुवन नारायण मंदिर का पुनः निर्माण इन्हीं के काल में हुआ, जिसे **समधीश्वर मंदिर** के नाम से जाना जाता है। इसी प्रकार कुम्भा से पूर्व राणा मोकल ने मेवाड़ की धार्मिक आस्था को बनाए रखा। राणा को स्थापत्य कला से भी प्रेम था इनके दरबार में फना, मना, विशल नामक वास्तुकार शोभा बढ़ाते थे। एकलिंग मंदिर के परकोटे का निर्माण किया। जब राणा मोकल गुजरात के शासक अहमद शाह के विरुद्ध अभियान पर जा रहे थे तो रास्ते में **जिलवाडा** नामक स्थान पर राणा क्षेत्र सिंह के दासीपुत्र चाचा व मेरा ने राणा मोकल की हत्या कर दी इसके उपरांत 1433 ई. में महाराणा कुम्भा गद्दी पर बैठे।

मोकल द्वारा किये मुख्य कार्य :-

- मोकल ने एकलिंगजी मंदिर का परकोटा (चारदिवारी) बनवाया।
- चित्तौड़ में स्थित **समद्धेश्वर मंदिर** का पुनर्निमाण करवाया।
- पहले समद्धेश्वर मंदिर को **"त्रिभुवन नारायण मंदिर"** कहा जाता था। कालांतर में इसे **समद्धेश्वर मंदिर** कहा जाने लगा, इस मंदिर का निर्माण "**भोज परमार**" ने करवाया था।
- 1433 ई. में गुजरात के शासक "अहमदशाह" ने मेवाड़ पर आक्रमण किया, उस समय "मेरा", "चाचा" और "महपा परमार" इन तीनों ने मिलकर जिलवाडा (राजसमंद) में राणा मोकल की हत्या कर दी, ये तीनो मोकल की सेना के व्यक्ति बताये जाते हैं।

राणा कुंभा (1433-1468 ई.)

राणा कुम्भा का जन्म – 1403 ई.

पिता – मोकल

माता – सौभाग्यदेवी

अध्याय – II

राजस्थान का एकीकरण

- ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली ने घोषणा की थी कि 3 जून 1948 तक भारत की सत्ता भारतीयों को सौंप दी जाएगी ।
- इन्होंने नया गर्वनर जनरल लार्ड माउन्टबेटन को नियुक्त किया (भारत का अंतिम गवर्नर जनरल)
- 31 दिसम्बर 1945 को उदयपुर राज्य में पण्डित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् के अधिवेशन में राजस्थान के एकीकरण का सुझाव दिया गया ।
- राजाओं के वैमनस्य को देखते हुए यह लगने लगा था कि ये लोग स्वयं कोई निर्णय नहीं ले पायेंगे । इसलिए यह अनुभव किया जाने लगा कि अब केन्द्र सरकार को ही एकीकरण का प्रयास करना होगा।
- अतः सरदार वल्लभ भाई पटेल ने 16 दिसम्बर 1948 को यह घोषणा की कि राजस्थान की सभी छोटी-बड़ी रियासतों को मिलाकर एक संघ का निर्माण किया जाएगा ।
- केबिनेट मिशन के अनुसार ब्रिटिश सरकार ने 22 मई 1946 ई. को घोषणा की कि छोटी-छोटी रियासतों को आपस में मिलाकर बड़ी इकाईयां बना लेनी चाहिए या पड़ौस की बड़ी रियासतों या प्रांतों में मिल जाना चाहिए ।
- भारत स्वतंत्रता अधिनियम - 1947 की आठवीं धारा के अनुसार देशी रियासतों पर से ब्रिटिश प्रभुसत्ता का अंत हो गया ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में तीन श्रेणी के राज्य थे –

(1) ए श्रेणी - वे राज्य, जो पूर्व में प्रत्यक्ष ब्रिटिश नियंत्रण में थे जैसे बिहार, बम्बई, मद्रास आदि । इनके प्रमुख राज्यपाल (गवर्नर) कहलाते थे ।

(2) बी श्रेणी - वे राज्य, जो स्वतंत्रता के बाद छोटी-बड़ी रियासतों के एकीकरण द्वारा बनाये गए थे, जैसे राजस्थान, मध्य भारत आदि । इनके प्रमुख राजप्रमुख कहलाते थे ।

(3) सी श्रेणी - ये वे छोटे-छोटे राज्य थे, जिन्हें ब्रिटिश काल में चीफ कमिशनर के प्रान्त कहा जाता था जैसे अजमेर, दिल्ली ।

- लार्ड माउन्टबेटन ने 3 जून 1947 को भारत विभाजन/डिकी बर्ड प्लान/बेंटन योजना प्रारम्भ की।
- इस अधिनियम की धारा 14 के अनुसार अब देशी रियासतें या तो भारत या पाकिस्तान में अपना विलय कर सकती थी या अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाये रख सकती थी ।
- सरदार वल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में एक रियासती विभाग का गठन किया गया जिसके सचिव वी.पी. मेनन बने, क्योंकि वी.पी. मेनन उस समय लार्ड माउन्टबेटन के सलाहकार थे।
- रियासती विभाग की स्थापना 5 जुलाई 1947 को की गई ।
- भारत सरकार ने यह तय किया कि केवल वे ही रियासतें अपना स्वतंत्र अस्तित्व रख सकती हैं जिनकी वार्षिक आमदनी एक करोड़ रूपये या जनसंख्या 10 लाख से अधिक है।
- इस मापदण्ड के अनुसार राजस्थान की केवल चार रियासतें जयपुर, जोधपुर, उदयपुर व बीकानेर ही अपना स्वतंत्र अस्तित्व रख सकती थीं ।
- जबकि चार अन्य रियासतें अलवर, भरतपुर, डूंगरपुर एवं जोधपुर अपने आप को स्वतंत्र रखना चाहती थी ।
- संविधान के 7 वें संशोधन द्वारा 'ए', 'बी', 'सी' श्रेणी का भेदभाव समाप्त कर दिया गया तथा राजप्रमुख के स्थान पर राज्यपाल का पद सृजित हुआ । राजपूताना को बी श्रेणी का राज्य माना गया था ।
- मेवाड़ के महाराणा भूपालसिंह ने राजस्थान की सभी रियासतों को मिलाकर राजस्थान यूनियन का गठन करने हेतु 25-26 जून, 1946 को उदयपुर में राजपूताना, गुजरात एवं मालवा के नरेशों का सम्मेलन बुलाया । उनका राजस्थान यूनियन के गठन का प्रयास असफल रहा ।
- इसी तरह के असफल प्रयास कोटा महाराव भीमसिंह ने हाड़ौती संघ बनाकर करने का प्रयास किया ।
- कोटा महाराव भीमसिंह को आधुनिक इतिहास में राजस्थान एकीकरण का जनक कहा जाता है ।

- डूंगरपुर के शासक महारावल लक्ष्मण सिंह ने बागड़ संघ बनाने का प्रयास किया ।
- राजस्थान की भौगोलिक स्थिति को सर्वप्रथम एक करने का प्रयास मुग़ल सम्राट अकबर द्वारा किया गया था ।
- स्वतंत्रता प्राप्ति के समय राजस्थान में कुल 19 रियासतें(अलवर, धौलपुर, करौली, भरतपुर, कोटा, बूंदी, झालावाड, टोंक, किशनगढ़, शाहपुरा, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा, डुंगरपुर, जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, उदयपुर, सिरोही), 3 ठिकाने (चीपफशिप / खुदमुख्तियार), लावा (जयपुर रियासत में स्थित, वर्तमान में टोंक में), कुशलगढ़ (बाँसवाड़ा), नीमराणा (अलवर) तथा 1 केन्द्र शासित प्रदेश अजमेर-मेरवाड़ा था ।
- धौलपुर व भरतपुर रियासत जाट शासकों के अधीन थी व टोंक रियासत पर मुस्लिम नवाब शासन करते थे ।
- राजस्थान की सबसे प्राचीन रियासत मेवाड़ थी जिसकी स्थापना गुहिल नामक व्यक्ति ने 566 ईस्वी में की तथा इसकी राजधानी नागदा थी। यहीं रियासत उदयपुर राज्य के नाम से प्रसिद्ध हुई ।
- सबसे नयी - झालावाड़ रियासत (1835 ई.) थी । यह राजपूताना की एकमात्र रियासत थी जिसकी स्थापना एक अंग्रेज लार्ड आकलैंड द्वारा की गई थी।
- क्षेत्रफल एवं जनसंख्या दोनों के आधार पर सबसे छोटी रियासत शाहपुरा थी । राजा सुदर्शन देव उसके शासक थे ।
- इन्होंने ही 14 अगस्त, 1947 को राजस्थान में सर्वप्रथम उत्तरदायी शासन शाहपुरा में स्थापित किया था ।
- क्षेत्रफल के आधार पर सबसे बड़ी रियासत मारवाड़ (जोधपुर) थी । महाराजा हनुवन्त सिंह उसके शासक थे । इन्होंने जोधपुर का विलय पाकिस्तान में करने का असफल प्रयास किया था ।
- जनसंख्या के आधार पर सबसे बड़ी रियासत जयपुर थी ।
- राजस्थान का एकीकरण सात चरणों में पूरा हुआ । यह प्रक्रिया 17 मार्च 1948 से आरम्भ होकर । नवम्बर 1956 तक चली ।
- 30 मार्च को राजस्थान दिवस के रूप में मनाया जाता हैं । क्योंकि इस दिन राजस्थान की बड़ी रियासतों को मिलाकर एकीकरण का कार्य लगभग पूर्ण कर लिया गया था ।
- आधुनिक राजस्थान का वर्तमान स्वरूप । नवम्बर 1956 को अस्तित्व में आया था । अतः । नवम्बर को राजस्थान स्थापना दिवस मनाया जाता हैं ।
- राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री पं. हीरालाल शास्त्री (23 मार्च, 1949 को बने) थे ।
- राजस्थान के प्रथम मनोनीत मुख्यमंत्री पं. हीरालाल शास्त्री थे ।
- राजस्थान के प्रथम दलित या अनुसूचित जाति का मुख्यमंत्री जगन्नाथ पहाड़िया थे ।
- राजस्थान के प्रथम निर्वाचित मुख्यमंत्री टीकाराम पालीवाल थे ।
- 1 नवम्बर, 1956 को राजस्थान के मुख्यमंत्री मोहन लाल सुखाड़िया थे इसलिए इन्हें आधुनिक राजस्थान का निर्माता कहा जाता हैं।
- 1 नवम्बर, 1956 से राजस्थान में राज्यपाल का पद प्रारम्भ हुआ और सरदार गुरमुख निहाल सिंह प्रथम राज्यपाल बने ।
- राजस्थान के प्रथम महाराज प्रमुख भूपालसिंह (उदयपुर), प्रथम राजप्रमुख उदयभान सिंह (धौलपुर) व प्रथम उप राजप्रमुख गणेशपाल वासुदेव (करौली) थे ।
- श्री पी. सत्यनारायण राव की अध्यक्षता में गठित कमेटी की सिफारिशों पर जयपुर को राजस्थान की राजधानी घोषित किया गया ।
- श्री पी. सत्यनारायण राव कमेटी के अन्य सदस्य वी. विश्वनाथ एवं वी. के गुप्ता थे ।
- पण्डित सत्यनारायण राव कमेटी के अनुसार हाई कोर्ट, जोधपुर में, शिक्षा विभाग बीकानेर में, खनिज और कस्टम व एक्साइज विभाग उदयपुर में राजस्व मण्डल अजमेर में वन और सहकारी विभाग कोटा में एवं कृषि विभाग भरतपुर में रखने का निर्णय किया गया ।
- शंकर राव देव समिति की सिफारिष को ध्यान में रखते हुए मत्स्य संघ को वृहत् राजस्थान में मिला दिया । वहां के प्रधानमंत्री श्री शोभाराम को शास्त्री मंत्रिमण्डल में शामिल कर लिया गया ।
- इस समिति के अन्य सदस्य श्री प्रभुदयाल एवं श्री आर. के. सिंघवी थे ।

राजस्थान का निर्माण किया गया। इसका उद्घाटन 15 मई 1949 को हुआ।

- मत्स्य संघ के प्रधानमंत्री शोभाराम जी कुमावत को शास्त्री जी के मंत्रिमंडल में सम्मलित कर लिया गया।

छठा चरण- सिरोही विलय

- 1947 को सिरोही गुजरात में मिला दिया गया। गोकुल भाई भट्ट एवं बलवंत सिंह मेहता ने इसका विरोध किया।
- पटेल ने गोकुल भाई भट्ट के गाँव हाथल के अलावा पूरे सिरोही को गुजरात में विलय कर लिया और उसने नेहरू से कहा कि, राजस्थानी नेताओं को गोकुल भाई भट्ट चाहिए जो मिल जायेगा।
- लेकिन भारी विरोध के बावजूद अन्ततः 26 जनवरी 1950 को सिरोही को वृहद् राजस्थान में मिला दिया गया और राजस्थान 'बी' श्रेणी का राज्य बना।
- आबू देलवाड़ा के संदर्भ में हीरालाल शास्त्री ने कहा था कि गोकुल भाई भट्ट के बिना राजस्थान निर्माण की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

सप्तम चरण- अजमेर विलय

- डॉ. फज़ल अली के नेतृत्व में गठित राज्य पुनर्गठन आयोग की सिफारिश पर। नवम्बर 1956 को केंद्र शासित प्रदेश अजमेर, मेरवाड़ा व मध्यप्रदेश के मंदसौर जिले की भानुपुर तहसील का सुनेल टप्पा ग्राम भी राजस्थान में शामिल कर लिया गया। माउंट आबू सिरोही जिले में सम्मलित हुआ तथा राजस्थान का सिरोंज ग्राम मध्यप्रदेश को दिया गया।
- 1 नवम्बर, 1956 समय 9 : 40 : 27 अजमेर, मेरवाड़ा, आबू, सुनेल टप्पा, मंदसौर से लेकर राजस्थान में मिलाया गया तथा बदले में सिरोंज गांव मध्यप्रदेश को दिया गया।
- अजमेर मेरवाड़ा केन्द्रशासित प्रदेश था, जहां अलग से विधानसभा चलती थी। इसे धारा सभा के नाम से जाना जाता था।
- इसके मुख्यमंत्री हरिभाऊ उपाध्याय थे, जिन्होंने अजमेर मेरवाड़ा के विलय का विरोध किया था।

सातवें संविधान संशोधन के वृहद् राजप्रमुख, उप राजप्रमुख, महाराजा प्रमुख पदों की समाप्ति और राज्यपाल का पद सृजित किया गया। सिरोही रियासत का विलय दो चरणों में हुआ था। राजस्थान के एकीकरण का खलनायक कोनार्ड कोर फील्ड था।

एकीकरण के चरण

(i) प्रथम चरण –

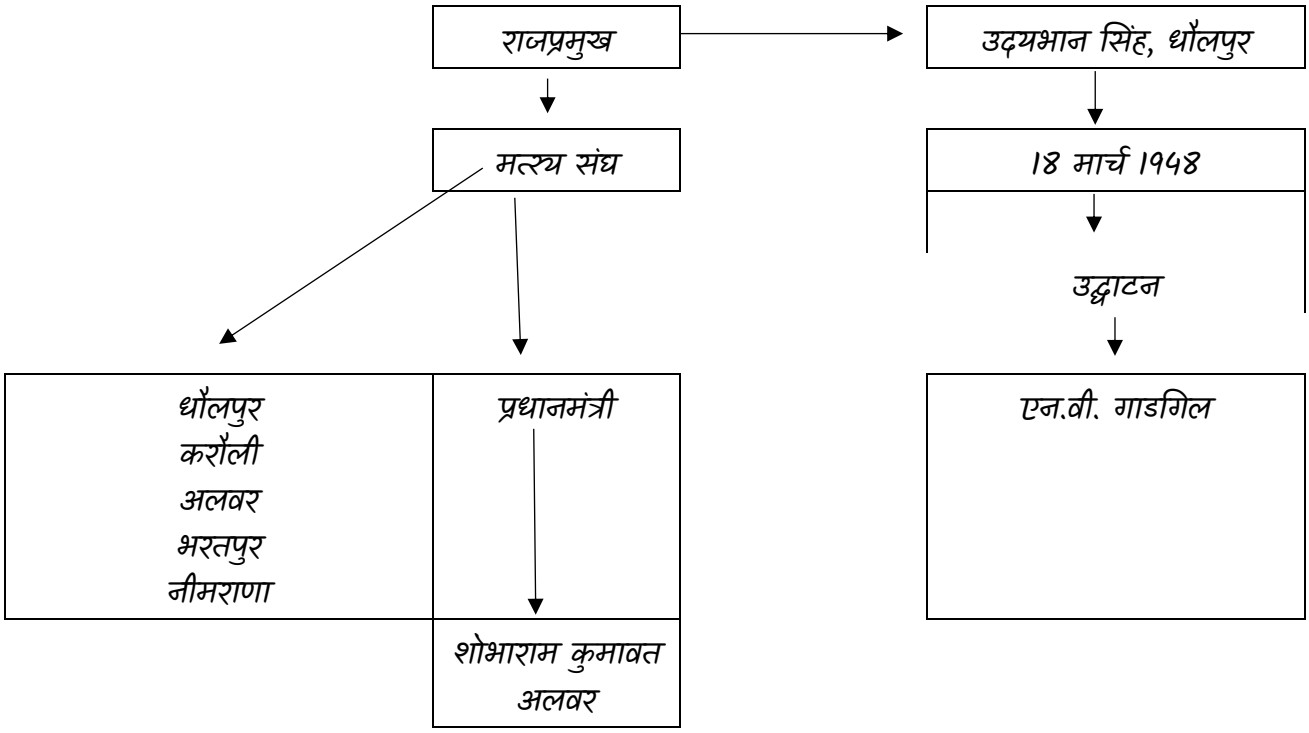

उपप्रधानमंत्री

जुगलकिशोर चतुर्वेदी, भरतपुर

(ii) द्वितीय चरण –

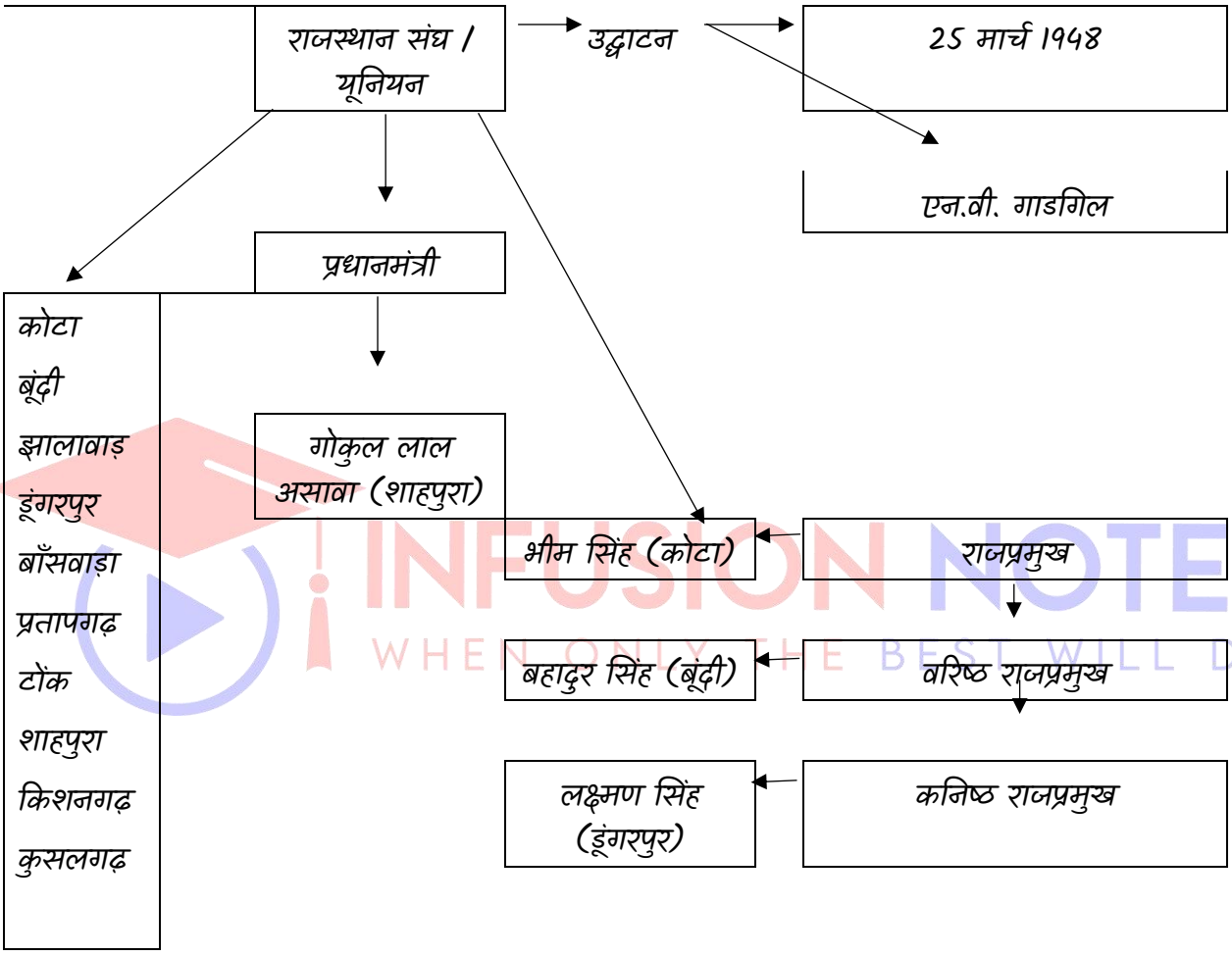

(iii) तृतीय चरण –

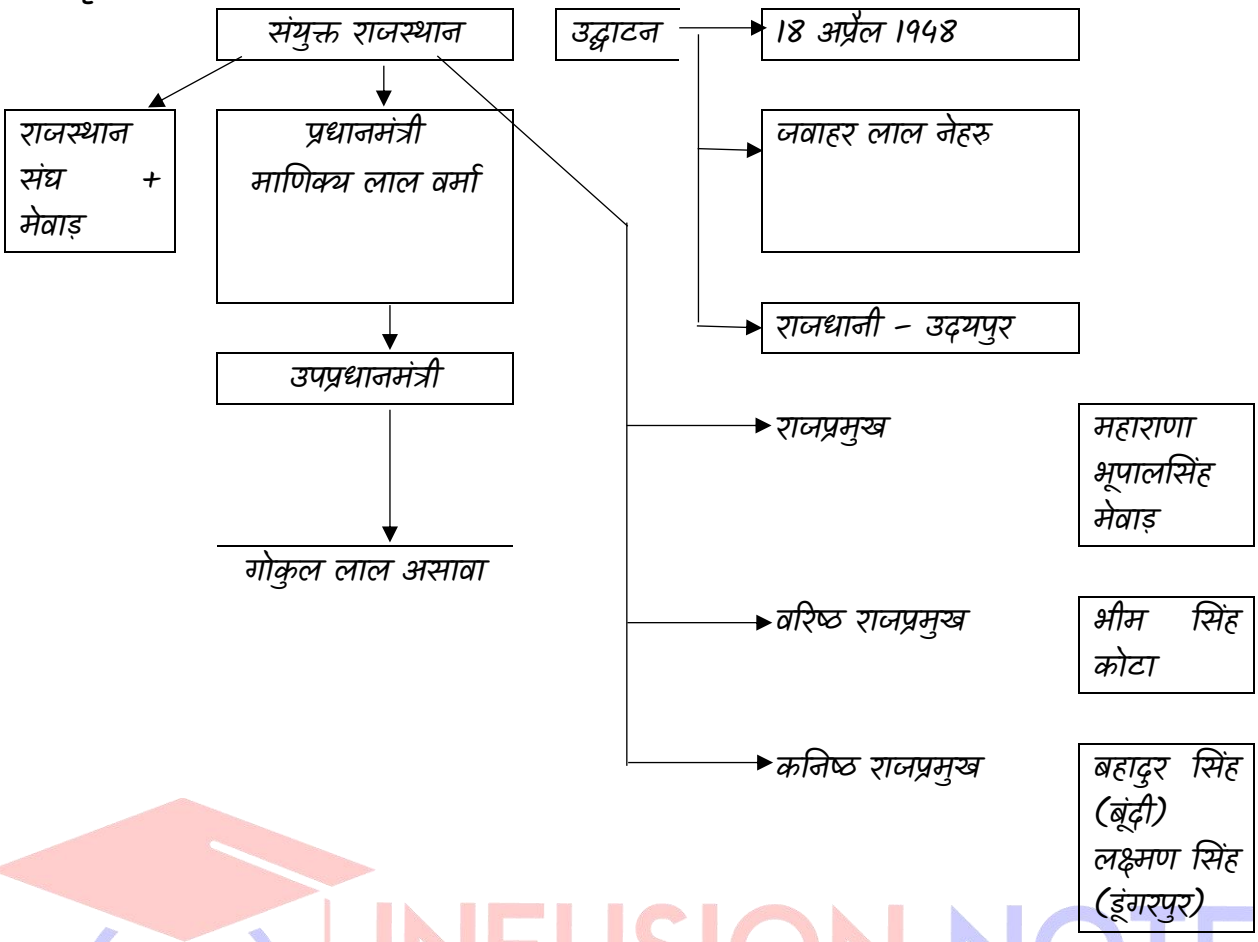

(iv) चतुर्थ चरण

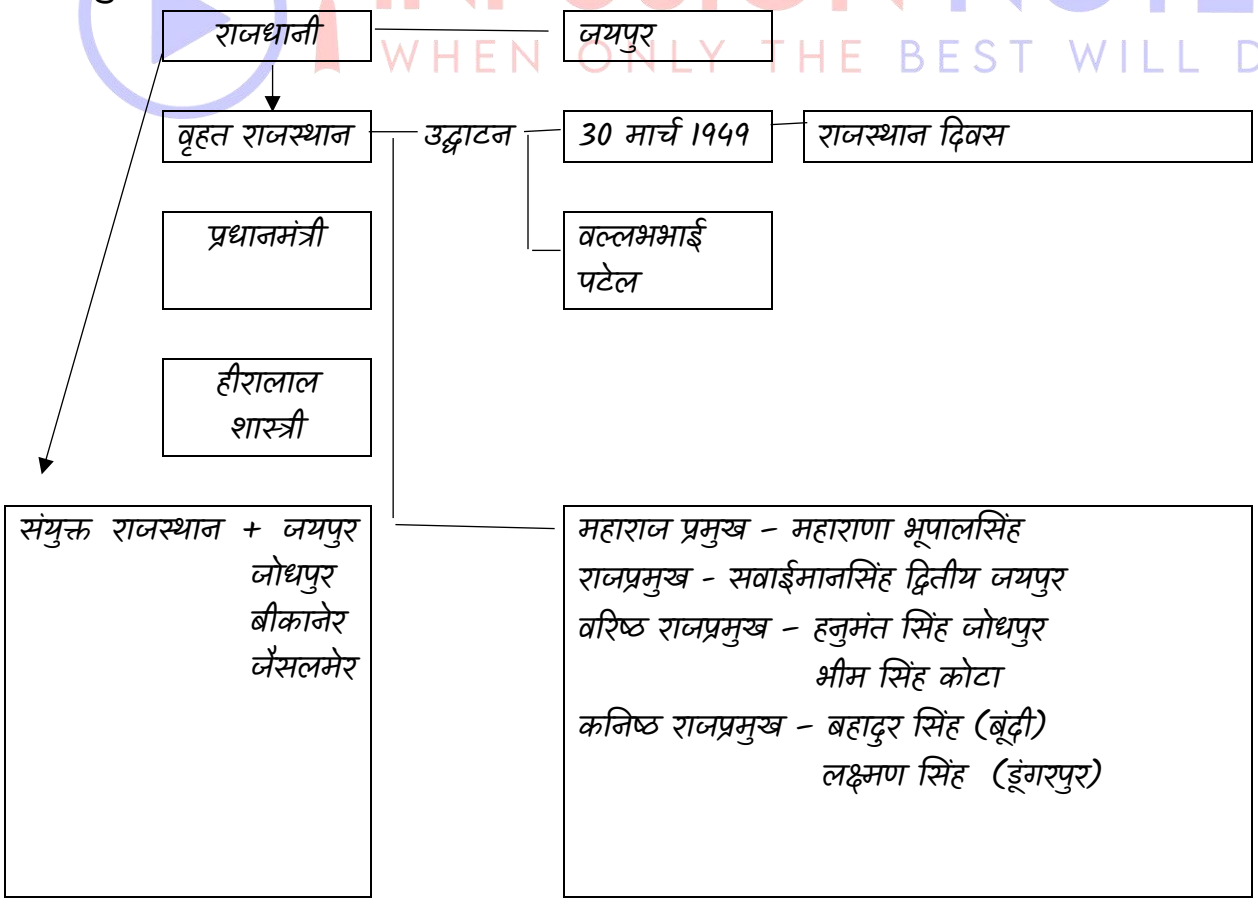

(v) पाँचवा चरण

- संयुक्त वृहत राजस्थान — उद्घाटन — 15 मई 1949
- वित्तीय समिति
- शंकरराव देव समिति
- मत्स्य संघ + वृहत राजस्थान

(vi) छठवां चरण -

छठवां चरण
- राजस्थान नाम दिया गया
- 26 जनवरी 1950
- प्रधानमंत्री – मनोनीत – हीरालाल शास्त्री

(vii) सातवाँ चरण –

सातवाँ चरण –
- 1 नवंबर 1956
- राज्य पुनर्गठन आयोग की सिफारिश पर
  - आबू देलवाड़ा – राजस्थान में विलय
  - अजमेर – मेरवाडा – राजस्थान में विलय
  - M.P. का सुनेल टप्पा – राजस्थान में विलय
- प्रधानमंत्री – मोहनलाल सुखाड़िया
- सत्यनारायण राव समिति (अध्यक्ष)
  - बी. विश्वनाथन
  - बी. के गुप्ता
- राजधानी – जयपुर
- राजस्व विभाग – अजमेर
- शिक्षा विभाग – बीकानेर
- कृषि विभाग – भरतपुर
- वन एवं सहकारी विभाग – कोटा
- खनिज विभाग – उदयपुर

❖ गत परीक्षाओं में आये हुए प्रश्न :-

1. अकबर के शासनकाल में लिखी गई किन्हीं तो फारसी कृतियों का उल्लेख कीजिए।
2. अकबर के दीन ए इलाही की प्रकृति की व्याख्या कीजिए।
3. एकीकृत राजस्थान में सिरोही के विलय पर संक्षिप्त लेख लिखिए।
4. राजस्थान में बेंगू किसान आंदोलन का आलोचनात्मक परीक्षण करें।
5. राजस्थान के जागीरदारी क्षेत्रों में कृषक असंतोष के कारणों की विवेचना कीजिए।
6. किस प्रकार 1857 का विद्रोह भारतीय इतिहास में एक निर्णायक मोड़ था?
7. 1857 की क्रांति की प्रकृति का वर्णन कीजिए।
8. राजस्थान के प्रजामंडल आंदोलन की मूलभूत विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।
9. मालदेव की हुमायूं व शेरशाह संबंधों की आलोचनात्मक विवेचना कीजिए।
10. राजस्थान की राजनीतिक जागृति में प्रजामंडल आंदोलनों की भूमिका का परीक्षण कीजिए।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय- I

राजस्थान की वास्तु परम्परा

❖ मंदिर

भारत में मंदिर निर्माण का प्रारंभिक व प्रायोगिक काल गुप्तकाल के प्रारंभ से सातवीं शताब्दी तक का काल माना जाता है।

I. मंदिर निर्माण की शैलियाँ

भारत में मुख्यतः मंदिर निर्माण की 3 शैलियाँ हैं :-

1. नागर शैली / आर्य शैली → उत्तर भारत में
2. द्रविड़ शैली → दक्षिण भारत में
3. बेसर / चालुक्य शैली → मध्य भारत में [यह द्रविड व नागर शैली का मिश्रण है।]

- राजस्थान में अधिकांश मंदिर नागर शैली में बने हुए हैं।

राजस्थान में मंदिर निर्माण की शैलियां -

I. प्रमुख मंदिर शैलियाँ-

मंदिर शैली	विशेषता
नागर शैली / आर्य शैली	• विशाल गुम्बद व विशाल गर्भगृह
द्रविड़ शैली	• स्तंभनुमा / पिरामिडनुमा मंदिर • छतें या शिखर गजप्रष्ठकृत
बेसर शैली	• द्रविड़ व नागर शैली का मिश्रण
ईकायतन शैली	• जो मंदिर एक ही देवता को समर्पित हो
पंचायत शैली	• मुख्या देवता व चारों ओर किनारों पर चार अन्य देवताओं (शिव, सूर्य, गणेश, शनि) के छोटे-छोटे मंदिर • उदा.- ओसियां (जोधपुर) के मंदिर विशेषतः
महामारु / गुर्जर प्रतिहार शैली	• राजस्थान में 8 वी से 12 वी शताब्दी तक अत्यधिक प्रचलित थी। • हर्षनाथ मंदिर सीकर, किराडू मंदिर बाड़मेर
जैन शैली	• संगमरमर का अधिक प्रयोग हुआ है। इसमें तीर्थकारों की विशाल प्रतिमाएं है तथा ये मंदिर गुफानुमा होतें है।

(1.) नागर या आर्य शैली-

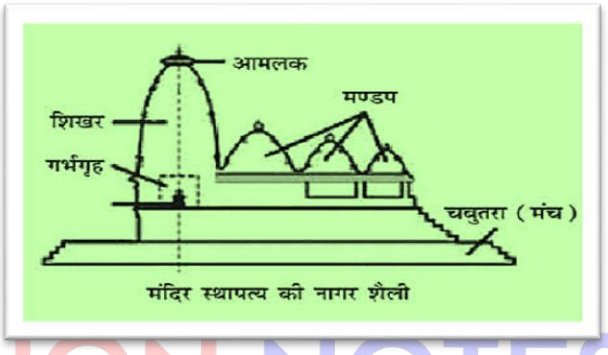

मंदिर स्थापत्य की नागर शैली

- उत्तरी भारत की शैली जिसमें मंदिर ऊँचे चबूतरे पर बना होता है।
- मंदिर का शिखर आमलक और कलश में विभेदित होता है।
- मंदिर में मूर्ति वाला स्थान गर्भगृह वर्गाकार होता है।
- पर्सी ब्राउन ने नागर शैली को उत्तर भारतीय आर्य शैली कहा ।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न है- किराडू का सोमेश्वर मंदिर (बाड़मेर), जगत अम्बिका मंदिर (उदयपुर),दधिमति माता मंदिर (नागौर),ओसिया के मंदिर (जोधपुर)।

(2.) भूमिज शैली

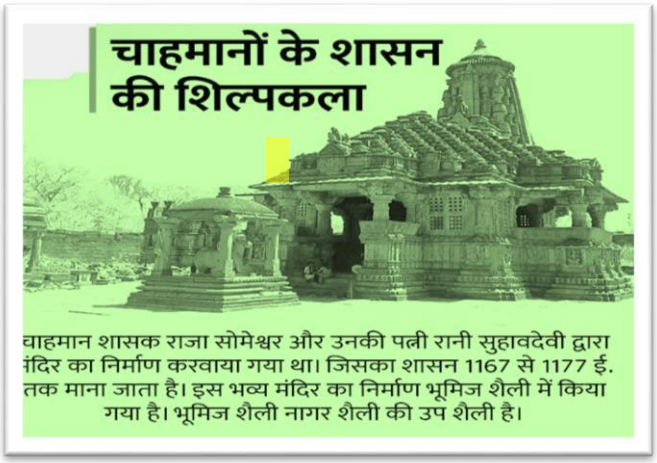

- यह नागर शैली के अंतर्गत आती है।
- यह नागर शैली की उपशैली महामारु / प्रतिहार शैली की शैली है जिसके अंतर्गत मंदिर का गुंबद अनेक खण्डों में बंटा होता है।
- इसमें प्रदक्षिणा पथ खुला होता है।
- भूमिज शैली का सबसे प्राचीन मंदिर पाली में स्थित सेवाड़ी जैन मंदिर है।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न हैं- उंडेश्वर मंदिर (बिजौलिया) 1025 ई., महानालेश्वर मंदिर (मैनाल, भीलवाड़ा) 1075 ई., अद्भुत नाथ जी का मंदिर (चितौड़गढ़)।

(3.) द्रविड़ शैली

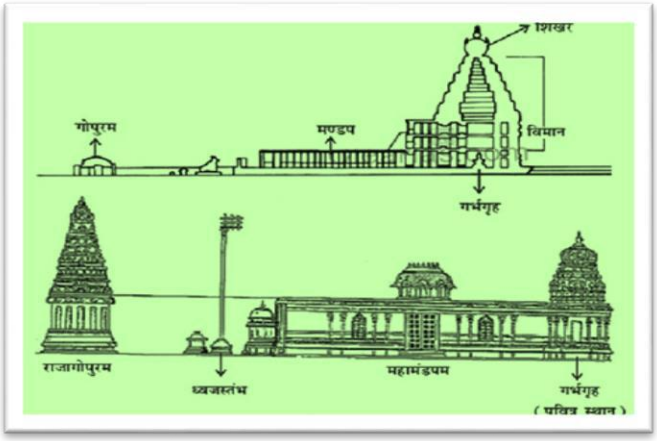

- दक्षिणी भारत की शैली।
- इस शैली में देव मूर्ति वाले गर्भ गृह के ऊपर ऊँचे विमान या पिरामिड बने होते है। जो अलंकृत होते है।
- इनमें बनाया गया गर्भगृह आयताकार होता है।
- मंदिर का मुख्य द्वार गोपुरम कहलाता है।

1. मंदिर में कई छोटे - छोटे मंदिर भी बने होते हैं जिन्हें 'देवरिया' कहा जाता है।

- मंदिर में अनेक कक्ष व जलकुंड बने होते है।
- ढका हुआ परिक्रमा पथ

- द्रविड़ शैली का राजस्थान में सबसे प्राचीन मंदिर धौलपुर में स्थित चौपड़ा मंदिर है।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न हैं- रंग नाथ (पुष्कर, अजमेर), महादेव मंदिर (झालावाड़)।

(4.) पंचायन शैली

- इसमें मुख्य मंदिर विष्णु को समर्पित होता है।
- इसके अलावा चार अन्य देव मंदिर सूर्य, शक्ति ,शिव व गणेश के होते है।
- ये मंदिर मुख्य मंदिर के चारों कोनों पर होते है तथा पाँचों का परिक्रमा पथ एक ही होता है।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न हैं- ओसियां के हरिहर मंदिर (जोधपुर), बूढादीत सूर्य मंदिर (कोटा), भंवाल माता (नागौर), जगदीश मंदिर (उदयपुर)।

(5.) राजसिंह शैली :-

यह भारत की प्राचीन पल्लव कला से विकसित शैली है। इस शैली का सर्वप्रथम उदाहरण 'शोर मंदिर ' है । पल्लव कला की प्रमुख विशेषताएँ - सिंह स्तम्भ, मंडप के सुदृढ़ स्तम्भ, शिखर, चार दीवारी और उसमें भीतर की ओर बने हुए छोटे-छोटे कक्ष, अलंकरण इत्यादि हैं। यह शैली कैलाश

❖ खाटू श्याम जी का मंदिर (सीकर)

- यहाँ शीश की पूजा की जाती है ।
- मंदिर की नींव 1720 ई . में अजमेर के अजीतसिंह सिसोदिया के पुत्र अभयसिंह ने रखी थी ।
- महाभारत में बर्बरीक के मस्तक को कलियुग में श्याम के रुप में पूजते हैं।
- यहाँ फाल्गुन शुक्ल एकादशी व द्वादशी को मेला भरता है।
- श्यामजी भीम के पुत्र घटोत्कच के पुत्र बर्बरीक थे।
- बाबा श्याम को हारे का सहारा कहा जाता है।
- प्रतिवर्ष फाल्गुन शुक्ल एकादशी व द्वादशी को यहाँ विशाल मेला भरता है।

❖ हर्षनाथ मंदिर(सीकर)

- इस मंदिर का निर्माण 956 ई. चौहान शासक सिंहराज ने रखी थी। इसके बाद मंदिर का निर्माण चौहान राजा विग्रहराज द्वितीय ने कराया।
- हर्ष महादेव मंदिर को हर्ष भैरू / हर्षनाथ के नाम से जाना जाता है ।
- यह मंदिर हर्ष गिरी की पहाडियों में स्थित है।
- चौहान वंश के शासक 'गूवक' ने इसका निर्माण विग्रहराज द्वितीय के काल में करवाया।
- यहाँ पर ब्रह्मा व विष्णु को शिवलिंग का आदि व अन्त जानने हेतु परिक्रमा करते हुए दिखाया गया है।
- यहाँ भगवान शिव का मंदिर , भैरवजी का मंदिर व हर्षनाथ का मंदिर है।
- 1679 ई . में औरंगजेब के सेनापति खानजहाँ बहादुर ने इस मंदिर को तुड़वा दिया।
- 18वीं सदी में सीकर के रावराजा शिवसिंह ने यहाँ पुनः मंदिर का निर्माण करवाया।
- प्रतिवर्ष भाद्रपद त्रयोदशी को यहाँ विशाल मेला भरता है। हर्ष जीण माता के भाई थे।
- हर्ष मंदिर में लिंगोद्भव की मूर्ति भी प्रतिष्ठित की गई थी। जो विश्व की एकमात्र मूर्ति थी। जो अब अजमेर के संग्रहालय में स्थित है।

❖ कल्याणजी का मंदिर (डिग्गी मालपुरा, टोंक)

- इस मंदिर का निर्माण मेवाड़ के तत्कालीन राणा संग्राम सिंह के शासन काल में संवत् 1584 (सन् 1527) के ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी को तिवाड़ी ब्राह्मणों द्वारा हुआ था।
- यहाँ कुष्ठ रोग का इलाज होता है।
- मुस्लिम इसे कलह पीर के नाम से जानते है।
- यहाँ विष्णु की चतुर्भुज मूर्ति है।
- डिग्गी मालपुरा में विष्णु भगवान की ऐसी मूर्ति जिसके सुबह में बाल्यावस्था दोपहर में युवावस्था एवं रात्रि में वृद्धावस्था के रूप में दर्शन होते हैं।
- कल्याणजी के मंदिर में श्रावण पूर्णिमा के दिन पदयात्रियों का विशाल मेला भरता है। भाद्रपद शुक्ल एकादशी व वैशाख पूर्णिमा को भी डिग्गी में मेले का आयोजन होता है।
- कहा जाता है कि एक बार इंद्र के दरबार में रहने वाली उर्वशी नामक अप्सरा को जब इंद्र ने क्रोध

- ***अप्पाजी सिंधियाँ की छतरी (ताउसर, नागौर)***
- ***अकबर की छतरी (बयाना दुर्ग , भरतपुर)***
- ***कुत्ते की छतरी (रणथम्भौर दुर्ग, सवाई माधोपुर)***
- ***पन्नाधाय की छतरी (उदयपुर)***
- ***कीरत सिंह सोढ़ा की छतरी(जोधपुर)***
- ***पालीवालों की छतरी (जैसलमेर)***

- ***छतरियों में खम्भों की विविधता***

खम्भों की संख्या	छतरियां	स्थान
8 खम्भों की छतरी	महाराणा प्रताप की छतरी	बान्डोली, उदयपुर
32 खम्भों की छतरी	जोधसिंह की छतरी	बदनोर, भीलवाड़ा
32 खम्भों की छतरी	जगन्नाथ कच्छवाहा की छतरी	भीलवाड़ा
32 खम्भों की छतरी	जयसिंह / जैत्रसिंह की छतरी	सवाईमाधोपुर
80 खम्भों की छतरी	मूसी महारानी की छतरी	अलवर
84 खम्भों की छतरी	भगवान शिव को समर्पित छतरी	बूंदी

- ***<u>राजस्थान की प्रमुख हवेलियाँ एव महल</u>***

जैसलमेर की प्रमुख हवेलियाँ

- ***पटवों की हवेली***

- *इस हवेली को 1805 ई. में गुमानचन्द बापना ने बनवाया था।*
- *यह हवेली पाँच मंजिला है जिसमें प्रथम मंजिल जहाज के आकार की, दूसरी मंजिल आयताकार तथा पाँचवीं मंजिल पर स्वतंत्र रथ आकार के जाली - झरोखे हैं।*
- *इस हवेली में हिन्दू, मुस्लिम, ईरानी, व यहूदी शैली का मिश्रण बना है ।*

- ***सालिम सिंह की हवेली***

- *जैसलमेर के प्रधानमंत्री सालिमसिंह ने 1815 ई. में इस हवेली का निर्माण करवाया।*
- *यह जैसलमेर की सबसे ऊँची इमारत है।*

- ***नथमल की हवेली***

- *इस हवेली का निर्माण हाथी और लालू नामक दो भाईयों ने 1881-85 ई . के बीच करवाया।*
- *पीले पत्थर से निर्मित दो हाथी हवेली के दरवाजे पर खड़े हैं जो द्वारपालों का आभास करवाते हैं।*
- ***राव राजा बर्सलपुर की हवेली - जैसलमेर***
- ***सोढ़ों की हवेली- जैसलमेर***
- ***दीवान आचार्य ईसरलालजी की हवेली- जैसलमेर***

शेखावटी

- ❖ **नवलगढ़ हवेली (झुंझुनूँ)**
- ➢ इसे शेखावाटी की स्वर्ण नगरी कहते हैं।
- ➢ भगतों की हवेली यहाँ की सबसे विशाल हवेली है।
- ❖ **सोने-चाँदी की हवेली (महनसर, झुंझुनू)**
- ❖ **माल जी का कमरा (चुरू)**
- ➢ इस कमरे का निर्माण सेठ शोभाचंद कोठारी के पुत्र मालचंद कोठारी ने करवाया था।
- ➢ यह भित्ति चित्रों के लिये प्रसिद्ध है।
- ❖ **रामनाथ गोयनका की हवेली :** मंडावा (झुंझुनू)
- ❖ **पंसारी की हवेली :** श्रीमाधोपुर (सीकर)
- ❖ **मन्त्रियों की हवेली :** चुरु
- ❖ **सुराणों की हवेली :** चुरु (चुरु का हवामहल)
- ❖ **खेतड़ी महल :** झुंझुनू (राजस्थान का दूसरा हवा महल)

जोधपुर

- ❖ **पुष्य हवेली- जोधपुर**
- ➢ पुष्य हवेली विश्व का एकमात्र ऐसा भवन है, जो एक ही नक्षत्र पुष्य नक्षय से बना है।
- ➢ पुष्य हवेली का निर्माण जसवन्त द्वितीय के कामदार पुष्करना रघुनाथमल जोशी उर्फ भूरजी ने करवाया।
- ❖ **बड़े मियां की हवेली**
- ❖ **राखी हवेल**

बीकानेर

- ❖ **रामपुरिया हवेली**
- ❖ **बच्छावतों की हवेली - कर्णसिंह बच्छावत ने बनवायी थी।**
- ❖ **मुंधड़ा हवेली**
- ❖ **मोहता हवेली**

बागौर हवेली- उदयपुर

- ➢ इसके निकट पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र स्थित है।
- ➢ यहाँ संसार की सबसे बड़ी पगड़ी रखी हुई है।

राजस्थान का हवेली स्थापत्य :-

- राजस्थान में हवेली स्थापत्य कला का विकास स्वतंत्र रूप से 17वीं-18वीं सदी में सेठ - साहूकारों द्वारा प्रमुख रूप से हुआ ।
- राजस्थान की हवेलियाँ अपने छज्जों, बरामदों और झरोखों पर बारीक व उम्दा नक्काशी के लिए प्रसिद्ध हैं।
- यहाँ पटवों की हवेली अपनी शिल्पकला, विशालता एवं अद्भुत नक्काशी के लिए प्रसिद्ध है। यह जैसलमेर में स्थित है।
- बीकानेर में स्थित रामपुरिया की हवेलियाँ गली में क्रमबद्ध रूप से स्थित तथा विशाल आँगन एवं स्थापत्य के लिए प्रसिद्ध है ।
- जोधपुर में स्थित पुष्य हवेली विश्व का एकमात्र भवन है, जो एक ही नक्षत्र (पुष्य नक्षत्र) से बना है तथा यहाँ की गोलेच्छा एवं टाटिया परिवारों की लाल पत्थरों की हवेलियाँ भी प्रसिद्ध है
- सीकर की हवेलियाँ समकालीन भित्तिचित्रों के लिए प्रसिद्ध हैं।
- शेखावाटी की हवेलियों का निर्माण हवेली शैली स्थापत्य कला की विशेषताओं के अनुरूप हुआ है जो अपने मिति चित्रण के लिए प्रसिद्ध है ।

अभ्यास प्रश्न

आरएएस मुख्य परीक्षा के पिछले वर्ष के प्रश्न

(Q1) मंदिर वास्तुकला में राजसिंह शैली की विशेषताओं का परीक्षण कीजिए। **(MAINS 2021)**

(Q2) राज्यस्थान में दुर्ग स्थापत्य की प्रमुख विशेषताओं का विवेचन कीजिए । **(MAINS 2016)**

(Q3) रणथम्भौर दुर्ग के सैन्य महत्व को समझाएँ । **(MAINS 2013)**

(Q4) गागरोन दुर्ग के स्थापत्य का वर्णन कीजिए। **(MAINS 2012)**

(Q5) हर्षदमाता मंदिर का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

(06) राजस्थान के हवेली स्थापत्य पर टिप्पणी दीजिए।

अध्याय- 3

प्रदर्शन कला एवं ललित कला तथा उनकी विशेषताएं

- **शास्त्रीय संगीत**
- **शास्त्रीय नृत्य**
- **लोक संगीत एवं वाद्ययन्त्र**
- **लोक नृत्य एवं नाट्य**

➢ संगीत से तात्पर्य गायन, वादन एवं नृत्य से है और यही तीन पक्ष इसके विकास के द्योतक हैं ।
➢ संगीत कला को दो भागों में बांटा जाता है-

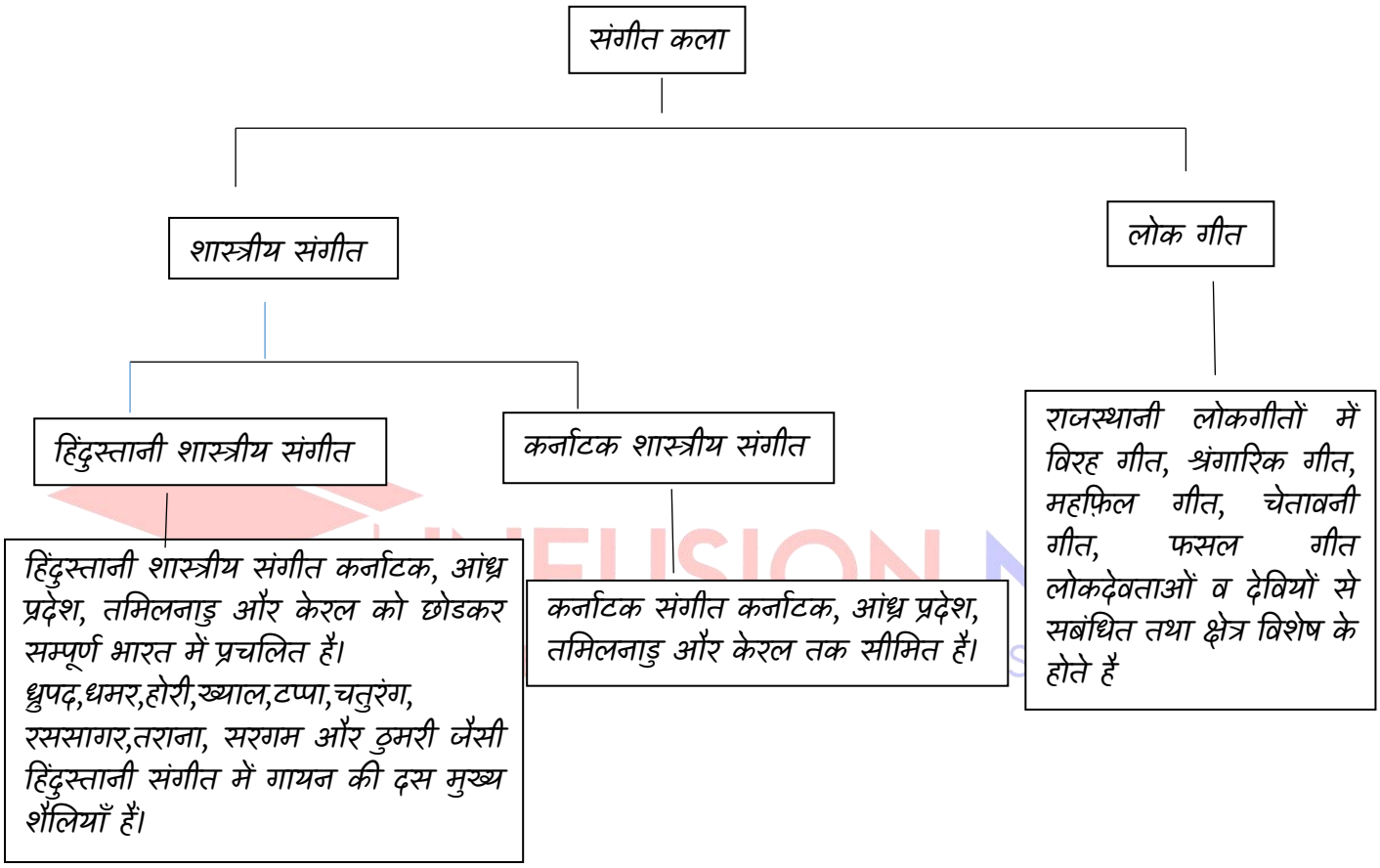

शास्त्रीय संगीत

- यह एक विशिष्ट गायन , वादन तथा नृत्य शैली का सूचक होता है जिसमें निश्चित नियमों का पालन किया जाता है ।

- इसमें भारतीय एवं ईरानी संगीत का समन्वय हुआ है ।
- भारतीय शास्त्रीय संगीत की परम्परा का संरक्षण विशिष्ट गुरु तथा शिष्य परम्परा के संयोग से बनता है , उस विशिष्ट गुरु शिष्य परम्परा को ' घराना ' कहा जाता है ।

- **राजस्थान में गायन, वादन व नृत्य के प्रमुख घराने**

राजस्थान में गायन के प्रमुख घराने		
घराना	**प्रवर्तक**	**विशेषताएँ**

जयपुर घराना	मनरंग (भूपत खां)	ख्याल गायन शैली का घराना है। मुहम्मद अली खां कोठी वाले इस घराने के प्रसिद्ध संगीतज्ञ हुए हैं।
पटियाला घराना	फ़तेह अली व अली बख्श(टोंक के नवाब इब्राहीम के दरबारी)	यह जयपुर घराने की उपशाखा है। (प्रसिद्ध पाकिस्तानी गजल गायक गुलाम अली इसी घराने के सदस्य हैं)
मेवाती घराना	उस्ताद घग्घे नजीर खां	इन्होंने जयपुर की ख्याल गायकी को ही अपनी विशिष्ट शैली में विकसित कर यह घराना प्रारम्भ किया।
डागर घराना	बहराम खां डागर	महाराजा रामसिंह के दरबारी गायक
रंगीला घराना	रमजान खां 'मियाँ रंगीले	मियाँ रंगीले जोधपुर के गायक इमाम बख्श के शिष्य थे।

राजस्थान में वादन के प्रमुख घराने		
घराना	**प्रवर्तक**	**विशेषताएँ**
बीनकार घराना(जयपुर	रज्जब अली बीनकार	रज्जब अली जयपुर के महाराजा रामसिंह के दरबार में प्रसिद्ध बीनकार थे।
सेनिया घराना(जयपुर)	तानसेन के पुत्र सूरत सेन	यह सितारवादियों का घराना है। इस घराने के गायक ध्रुपद की गौहर वाणी व खण्डारवाणी में सिद्धहस्त थे।

राजस्थान में नृत्य के प्रमुख घराने		
घराना	**प्रवर्तक**	**विशेषताएँ**
जयपुर का कथक घराना	भानूजी	उत्तर भारत के प्रसिद्ध शासीय नृत्य कथक का उद्भव राजस्थान में 13 वीं सदी में माना जाता है।

राजस्थान की प्रमुख स्थानीय गायन शैलियाँ

(i) माँड गायिकी

- माँड क्षेत्र (जैसलमेर) में गाई जाने वाली राग ' माँड ' राग कहलाई।
- राज्य की प्रसिद्ध माड गायिकाएँ - श्रीमती बन्नो बेगम (जयपुर) स्व . हाजन अल्लाह - जिलाह बाई (बीकानेर) , स्व . गवरी देवी (बीकानेर) , गवरी देवी (पाली) , माँगीबाई (उदयपुर) , श्रीमती जमीला बानो (जोधपुर) आदि ।

(ii) मांगणियार गायिकी

- माँगणियार मुस्लिम मूलतः सिंध प्रांत के है।
- राजस्थान की पश्चिमी मरुस्थलीय सीमावर्ती क्षेत्रों बाड़मेर, जैसलमेर, जोधपुर आदि में मांगणियार जाति के लोगों द्वारा अपने यजमानों के यहाँ मांगलिक अवसरों पर गायी जाती है।
- मांगणियार गायिकी में मुख्यतः 6 राग एवं 36 रागनियाँ होती है ।

- इनके प्रमुख वाद्य कमायचा , खड़ताल आदि हैं।
- प्रमुख मांगणियार कलाकार -साकर खाँ मांगणियार (कमायचा वादक) साफर खाँ (ढोलक वादक) , स्व . सद्दीक खाँ मांगणियार (प्रसिद्ध खड़ताल वादक) ।

(iii) लंगा गायिकी

- बीकानेर , बाड़मेर , जोधपुर एवं जैसलमेर जिले के पश्चिमी क्षेत्रों में मांगणियारों की तरह मांगलिक अवसरों एवं उत्सवों पर लंगा जाति के गायकों द्वारा गायी जाने वाली गायन शैली ' लंगा गायिकी ' कहलाती है ।
- सारंगी व कमायचा इनके प्रमुख वाद्य हैं।
- राजपूत इनके यजमान होते हैं।
- प्रमुख लंगा कलाकार- फूसे खाँ , महरदीन लंगा , अल्लादीन लंगा , करीम खाँ लंगा ।

(iv) तालबंदी गायिकी

- राजस्थान के पूर्वी अंचल - भरतपुर , धौलपुर , करौली एवं सवाई माधोपुर आदि में लोक गायन की शास्त्रीय परम्परा है , जिसमें राग - रागनियों से निबद्ध प्राचीन कवियों की पदावलियाँ सामूहिक रूप से गायी जाती है , इसे ही ' तालबंदी ' गायिकी कहते हैं ।
- इसमें प्रमुख वाद्य सारंगी , हारमोनियम , ढोलक , तबला व झाँझ हैं एवं बीच - बीच में नगाड़ा भी बजाते हैं ।

राग मंजरी के लेखक हैं [RAS - 99]
(a) महाराणा कुंभा **(b) पुण्डरीक विठ्ठल**
(c) महाराणा प्रताप (d) महाकवि पद्माकर

राजस्थान के प्रमुख संगीत ग्रंथ

❖ संगीत राज

- इसकी रचना मेवाड़ के महाराणा कुम्भा द्वारा 15 वीं सदी में की गई।
- ये पाँच कोषो पाठ्य, गीत, वाद्य, नृत्य और रस रत्नकोष आदि में विभक्त हैं। इसे 'उल्लास कहा गहै।
- उल्लास को पुनः परीक्षण में बांटा गया हैं।
- इसमें ताल, राग, वाद्य, नृत्य, रस, स्वर आदि का विस्तार से वर्णन किया गया हैं।

❖ राग मंजरी

- इसकी रचना पुण्डरीक विठ्ठल ने की थी।
- ये जयपुर महाराजा मानसिंह के दरबारी थे।
- प्रमुख लंगागायिकी कलाकार :- महरदीन लंगा, अल्लादीन लंगा, करीम खां लंगा, फुसे खां

❖ राग माला

- इस ग्रंथ की रचना भी पुण्डरीक विठ्ठल ने की थी।
- इसमें राग रागिनी व शुद्ध स्वर-सप्तक का उल्लेख किया गया हैं।

❖ शृंगार हार

- रणथम्भौर के शासक हम्मीर देव ने इस ग्रंथ की रचना की थी।
- श्रृंगार हार ग्रंथ में सर्वप्रथम मेल राग पद्धति का उल्लेख मिलता है ।

❖ राधागोविन्द संगीत सागर

- इसकी रचना जयपुर के महाराजा सवाई प्रतापसिंह के द्वारा करवाई गई ।
- इस ग्रंथ के लेखन में इनके राजकवि देवर्षि बृजपाल भट्ट का महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं।
- इस ग्रंथ में बिलावल को शुद्ध स्वर सप्तक कहा गया हैं।

धुंसो / धुंसा
- यह मारवाड़ का राज्य गीत है। इस गीत में अजीत सिंह की धाय माता गोरा धाय का वर्णन है।

घूमर
- यह गणगौर के त्यौंहार व विशेष पर्वो तथा उत्सवों पर मुख्य रूप से गाया जाता है।

घुड़ला
- यह मारवाड़ क्षेत्र में होली के बाद घुड़ला त्यौंहार के अवसर पर कन्याओं द्वारा गाया जाने वाला लोकगीत है।

घुघरी
- बच्चे के जन्म के अवसर पर गाया जाने वाला गीत हैं।

घोड़ी
- लड़के के विवाह के अवसर पर निकासी के समय गाया जाने वाला गीत है।

रतन राणा
- यह अमरकोट (पाकिस्तान) के सोढा राणा रतन सिंह का गीत है।
- यह पश्चिमी क्षेत्र में गाया जाने वाला सगुन भक्ति का गीत है।

रातिजगा
- रातभर जाग कर गाये जाने वाले गीत रातिजगा गीत कहलाते हैं।

रसिया
- यह गीत भरतपुर, धौलपुर में गाया जाता है।

जलो और जलाल / जला
- वधू के घर जब स्त्रियाँ वर की बारात का डेरा देखने जाती है, तब यह गीत गाया जाता है।

जीणमाता का गीत
- यह गीत राजस्थान के समस्त गीतों में सबसे लम्बा लोक गीत है।
- इस गीत में भाई-बहन के प्रेम, पहाड़ों की तपस्या, मन्नतों का पूरा होना और आक्रमणकारियों से क्षेत्र की रक्षा का वर्णन किया जाता है।

जकडियां
- यह पीर ओलियों की प्रशंसा में गाया जाने वाला धार्मिक गीत है। राजस्थानी मुस्लिम समाज में इन गीतों का प्रचलन सर्वाधिक है।

जच्चा
- यह गीत पुत्र जन्म के अवसर पर गाया जाता है, इसका अन्य नाम होलर है।

जीरो
- इस गीत में पत्नी अपने पति को जीरे की खेती न करने का अनुरोध करती है।

चरचरी
- ताल और नृत्य के साथ उत्सव में गाई जाने वाली रचना **'चरचरी'** कहलाती है।

चाक गीत
- विवाह के समय स्त्रियों द्वारा कुम्हार के घर जाकर घड़ा पूजने के समय गाया जाता है।

चिरमी
- यह गीत चिरमी पौधे को सम्बोधित करके नववधु द्वारा भाई व पिता की प्रतीक्षा में गाया जाता है।

हींडा
- यह गीत सहरिया जनजाति में दीपावली के अवसर पर गाया जाता है।

लहंगी
- यह गीत जनजाति के द्वारा वर्षा ऋतु में गाया जाता है।

आल्हा
- यह गीत सहरिया जनजाति के द्वारा वर्षा ऋतु में गाया जाता है।

1. ***जनजातीयों के नृत्य***
2. ***व्यवसायिक लोकनृत्य***
3. ***जातीय नृत्य***
4. ***क्षेत्रिय नृत्य***

❖ ***राजस्थान के क्षेत्रीय लोकनृत्य***

➢ ***घूमर***

- *' घूमर ' शब्द की उत्पत्ति ' घुम्म ' से हुई है , जिसका अर्थ होता है , ' लहंगे का घेर ' ।*
- *घूमर में महिलाएं घेरा बनाकर ' घूमर लोकगीत ' की धुन पर नाचती हैं ।*
- *घूमर के साथ आठ मात्रा के कहरवे की विशेष चाल होती है , जिसे सवाई कहते हैं ।*
- *घूमर नृत्य की उत्पति मध्य एशिया के भरंग नृत्य से मानी जाती है ।*
- *यह राजस्थान का राजकीय नृत्य है ।*
- *यह नृत्य मारवाड़ व मेवाड़ में राजघराने की महिलाओं द्वारा गणगौर पर किया जाता है ।*
- *राजस्थान की संस्कृति का पहचान चिह्न बन चुका ' घुमर ' नृत्य राजस्थान के ' लोकनृत्यों की आत्मा ' कहलाता है।*
- *इसे सिरमौर नृत्य व नृत्यों की आत्मा सामंतशाही नृत्य , रजवाड़ी नृत्य , महिलाओं का सर्वाधिक लोकप्रिय नृत्य कहते हैं ।*
- *यह गरबा नृत्य की तरह किया जाता है ।*
- *घूमर- साधारण स्त्रियों द्वारा किया जाता है।*
- *झूमरिया- यह बालिकाओं द्वारा किया जाता है।*

➢ ***झूमर नृत्य***

- *हाड़ौती क्षेत्र में स्त्रियों द्वारा मांगलिक अवसरों एवं त्यौहारों पर किया जाने वाला गोलाकार नृत्य जो डाण्डियों की सहायता से किया जाता है।*

➢ ***घुमरा नृत्य***

- *इसे भील जनजाति की महिला करती है।*
- *यह गरबा जैसा होता है।*
- *यह मांगलिक अवसर पर किया जाता है ।*
- *यह अर्द्ध वृताकार घेरे में महिलायें करती हैं ।*
- *इस नृत्य में 2 दल होते हैं जिसमें एक दल गाता है तथा दूसरा नाचता है।*

➢ ***घूमर-घूमरा नृत्य***

- *घूमर - घूमरा नृत्य राजस्थान का एकमात्र शोक सूचक नृत्य है।*
- *जो केवल वागड़ क्षेत्र के कुछ ब्राह्मण समुदाय में किया जाता है ।*

➢ ***ढोल नृत्य***

- *राजस्थान के जालौर क्षेत्र में शादी के अवसर पर पुरुषों के द्वारा सामूहिक नृत्य करते हुए विविध कलाबाजियाँ दिखाते हैं।*
- *इस नृत्य को प्रकाश में लाने का श्रेय जयनारायण व्यास को जाता है।*
- *यह नृत्य ढोली, सरगरा, माली, भील आदि जातियों द्वारा किया जाता है।*
- *इस नृत्य में कई ढोल एवं थालियाँ एक साथ बजाए जाते हैं।*
- *ढोलवादकों का मुखिया थाकना शैली' में ढोल बजाना प्रारम्भ करता है।*

➢ ***घुड़ला नृत्य***

5. गवरी नृत्य में भगवान शिव का रूप करने वाला नाटककार कहलाता है ?

A. बूड़िया
B. पुरिया/राई
C. झामटिया
D. कुटकडिया **(B)**

6. गवरी नाटक में कुल कितनी लघु नाटिकाऐ हैं और सबसे अंतिम नाटिका का क्या नाम है ?

A. 9, घडावत
B. 10, मियावड
C. 11, वलावण
D. 12, भंवरा- भंवरी **(C)**

7. निम्न में से किस लोक नृत्य के जनक केकड़ी (अजमेर) के बिग्गाजी जाट या नागाजी जाट माने जाते हैं जो कि एक व्यवसायिक नाटक हैं ?

A. भवाई
B. बहरूपिया
C. चारबैंत
D. नौटंकी **(A)**

8. लिटिल बवंडर की उपाधि प्राप्त श्रेष्ठा सोनी किस लोकनाट्य से जुड़ी हैं ?

A. भवाई
B. गवरी
C. चारबैंत
D. नौटंकी **(A)**

9. राजस्थान में नौटंकी लोकनाट्य के जनक किसे माना जाता हैं?

A. नत्थाराम शर्मा
B. भूरीलाल
C. गिरिराज प्रसाद
D. फैजुल्ला खां **(B)**

10. चारबैंत , जो राजस्थान कहाँ की प्रसिद्ध हैं?

A. जैसलमेर
B. टोंक
C. बाँसवाड़ा
D. श्रीगंगानगर **(B)**

अभ्यास प्रश्न

1. आरएएस मुख्य परीक्षा गत वर्ष प्रश्न

Q1. रावणहत्था क्या हैं? [2021]

Q2. राजस्थान की उन जनजातियों पर प्रकाश डालिए जो संगीत विद्या में पारंगत हैं। [2012]

Q3. तमाशा लोकनाट्य पर संक्षिप्त टिप्पणी दीजिए ।

Q4. राजस्थान की चार प्रमुख व्यावसायिक जातियों के नाम लिखिए, जिन्होंनें संगीत को एक व्यवसाय के रूप में अपनाया।

Q5. गींदड़ नृत्य का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

Q6. अलगोजा पर टिप्पणी दीजिए।

Q7. करताल व खड़ताल पर टिप्पणी दीजिए।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय- 4

भाषा एवं साहित्य

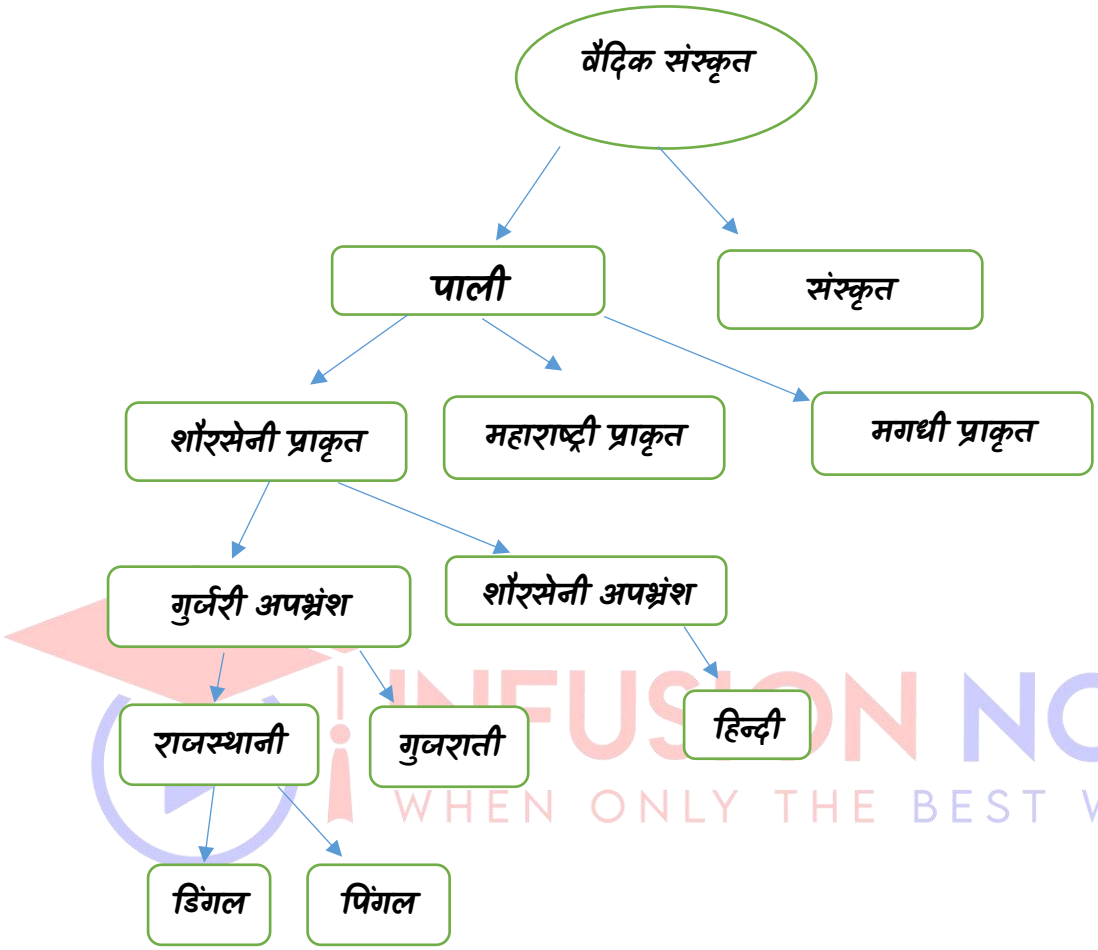

राजस्थानी भाषा या राजस्थानी हिन्दी

क्षेत्र	बोली
पश्चिमी राजस्थान	जोधपुर की खड़ी, राजस्थानी इटकी, बीकानेरी, बागड़ी, शेखावाटी, मेवाड़ी, खैराड़ी, सिरोही की बोलियाँ, गोड़ावाडी, देवड़ावाटी
उत्तरी-पूर्वी राजस्थान	अहीरवाटी और मेवाती
मध्य-पूर्वी राजस्थान	ढून्ढाड़ी, तोरावाटी, खड़ी, जयपुरी, कौंटड़ा, राजावाटी, अजमेरी, किशनगढ़ी, चौरासी, नागारचाल, हाड़ौंती
दक्षिणी-पूर्वी राजस्थान	मालवी- रागड़ी और सौंडवाड़ी
दक्षिणी राजस्थान	नीमाड़ी

❖ राजस्थानी भाषा

- ' राजस्थान के लिए एक लोक कहावत प्रसिद्ध है कि- "पाँच कोस पर पानी बदले, सात कोस पर बाणी।"
- राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं सूची में शामिल 22 भाषाओं में शामिल नही क्या गया है । इस सम्बन्ध में सलाह देने हेतु केन्द्र सरकार ने हाल ही में एक समिति का गठन भी किया है।
- राजस्थानी भाषा राजस्थान मध्य भारत के पश्चिमी भाग , सिन्ध , पंजाब , हरियाणा के राजस्थान के निकटवर्ती क्षेत्रों में बोली जाती है।
- 21 फरवरी को राजस्थानी भाषा दिवस तथा 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- वर्तमान में राजस्थानी भाषा बोलने वालों की संख्या 11-12 करोड़ से अधिक है।
- राजस्थानी भाषा का वक्ताओं की दृष्टि से भारत में 7वाँ स्थान तथा विश्व में 16वाँ स्थान है ।
- राजस्थान की राजभाषा हिन्दी है परन्तु यहाँ की मातृभाषा राजस्थानी है।
- भाषा विज्ञान के अनुसार राजस्थानी भाषा भारोपीय भाषा परिवार के अंतर्गत आती है।
- राजस्थानी बोलियों का सर्वप्रथम वैज्ञानिक वर्गीकरण सन् 1912 ई. में सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने अपनी पुस्तक **"लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया" (विषयक विश्व कोष)** में किया तथा सर्वप्रथम राजस्थानी शब्द दिया।
- सन् 1914 से सन् 1918 के बीच इटली के विद्वान एल . पी . टेस्सी टोरी ने **"इण्डियन ऐन्टीक्वेरी"** नामक पत्रिका में राजस्थानी भाषा की उत्पति और विकास पर प्रकाश डाला ।
- राजस्थानी भाषा ' मुड़िया ' लिपि में लिखी जाती है।
- बिना मात्रा वाले महाजनी शब्द मोड़ कर लिखे जाते है जिन्हें मुड़िया अक्षर कहते है ।
- मुडियां अक्षर के आविष्कारक राजा टॉडरमल थे।
- प्राचीन समय में राजस्थान की भाषा को ' मरू ' भाषा के नाम से जाना जाता था ।
- जैन कवियों ने अपने ग्रन्थों की भाषा को मरू भाषा कहा है ।
- मरू भाषा का सर्वप्रथम उल्लेख वि.सं. 835 में उद्योतन सूरी द्वारा लिखित ' **कुवलयमाला** ' में वर्णित 18 देशी भाषाओं में किया गया जो पश्चिमी राजस्थान की भाषा थी ।
- कवि कुशललाभ के ग्रन्थ **"पिंगल शिरोमणि"** तथा अबुल फजल के **"आईने अकबरी"** में **"मारवाड़ी शब्द"** का प्रयोग किया गया है
- 17वीं शताब्दी की ' नौबोली छंद ' तथा 18वीं शताब्दी की ' आठ देशरी गुजरी ' नामक रचनाओं में भी मरू भाषा का उल्लेख हुआ है ।
- राजस्थान की कुल बोलियों की संख्या 73 है ।
- राजस्थान के सबसे अधिक क्षेत्रफल में बोली जाने वाली भाषा मारवाड़ी है ।
- राजस्थान में जनसंख्या के आधार पर सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा ढूंढाड़ी है ।

❖ राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति, उत्पत्ति काल व स्वतंत्रकाल

➢ उत्पत्ति

- डॉ. एल. पी. टेस्सीटोरी व महावीर प्रसाद शर्मा राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति **शौरसेनी अपभ्रंश** से मानते है ।
- डॉ. जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन एवं डॉ. पुरुषोत्तम मोनारिया राजस्थानी भाषा का उत्पत्ति **नागर अपभ्रंश** से मानते है ।
- के. एम. मुंशी एवं मोतीलाल मेंनारिया राजस्थानी भाषा का उत्पत्ति **गुर्जर अपभ्रंश** से मानते है।
- सुनीति कुमार चटर्जी के अनुसार राजस्थानी भाषा का उत्पत्ति सौराष्ट्री अपभ्रंश से हुआ।
- गुर्जरी अपभ्रंश से ऐतिहासिक , भौगोलिक एवं भाषा वैज्ञानिकी के आधार पर राजस्थानी भाषा की उत्पति मानी जाती है ।
- राजस्थानी भाषा के दो साहित्यिक रूप हैं- 1. डिंगल 2. पिंगल

डिंगल	पिंगल

• यह पश्चिमी राजस्थानी का साहित्यिक रूप है। • इसका विकास गुर्जरी अपभ्रंश से हुआ। • इसका अधिकांश साहित्य चारण कवियों द्वारा लिखा गया। • यह मारवाड़ी मिश्रित राजस्थानी है। • यह शैली गीत के रूप में है। • डिंगल की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें जो शब्द जिस तरह बोला जाता है , ठीक उसी तरह लिखा जाता है । • इसके ग्रंथ- राजरूपक , वचनिका राठौड़ , रतनसिंह , महेसदासौत री , अचलदास खींची री वचनिका , राव जैतसी रौ छंद , रुक्मणि हरण , नागदमण , सगतसिंह रासौ , ढोलामारू रा दूहा । • डिंगल शैली के चार उपशैलियाँ हैं- • (i)चारण शैली (ii)जैन शैली (iii) संत शैली (iv)लौकिक शैली • डिंगल शैली का सर्वप्रथम प्रयोग कुशललाभ द्वारा रचित ' पिंगल - शिरोमणी (वि.सं. - 1607-08) ' नामक ग्रंथ में किया गया । • 1871 में जोधपुर के कविराज बांकीदास की 'कुकवि बत्तीसी ' नामक रचना में डिंगल शब्द का प्रयोग प्रथम बार किया गया । • रामकरण आसोपा ने डिंगल का शब्दकोष तैयार किया । राजस्थानी भाषा का पहला व्याकरण रामकरण आसोपा के द्वारा लिखा गया।	• पूर्वी राजस्थानी का साहित्यिक रूप है। • इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ। • इसका अधिकांश साहित्य भाट कवियों द्वारा लिखा गया। • यह ब्रज मिश्रित राजस्थानी है। • यह शैली छंद एवं पदों (काव्य) में है। • इसके ग्रंथ- पृथ्वीराज रासौ , रतन रासौ , विजयपाल रासो , वंश भास्कर , खुमाण रासौ, राज विलास , पांडव दशेन्द्र चन्द्रिका , हम्मीर रासो व अवतार चरित्र ।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

➢ **उत्पत्ति काल**

- राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति मोटे तौर पर विद्वानों ने 12वीं सदी के अंतिम चरण में माना है।
- क्योंकि ' भरतेश्वर बाहुबली घोर ' तथा ' भरतेश्वर बाहुबली घोष ' जैन रचनाएं इसी समय की लिखी हुई है ।
- डॉ . एल . पी . टेस्सीटोरी के अनुसार राजस्थानी भाषा 12वीं सदी में अस्तित्व में आ चुकी थी ।
- राजस्थानी साहित्य लेखन के सर्वप्रथम प्रयास 13वीं सदी में किये गये ।
- राजस्थानी एवं गुजराती का मिला - जुला रूप 16वीं सदी के अंत तक चलता रहा ।
- 16वीं सदी के बाद राजस्थानी भाषा का विकास एक स्वतंत्र भाषा के रूप में होने लगा ।
- 17 वीं सदी के अंत तक आते - आते राजस्थानी पूर्णतः एक स्वतंत्र भाषा का रूप ले चुकी थी ।

राजस्थानी भाषा का उत्पति काल है
(RAS 2000)

(a) 15वीं शताब्दी का अंतिम चरण
(b) 12वीं शताब्दी का अंतिम चरण
(c) 18वीं शताब्दी का अंतिम चरण
(d) 10वीं शताब्दी का अंतिम चरण

ऐतिहासिक , भौगोलिक एंव भाषा वैज्ञानिकों के आधार पर राजस्थानी की उत्पति मानी जाती है- (RAS1996)

(a) शौरसेनी अपभ्रंश (b) नागर अपभ्रंश
(c) मारू गुर्जर अपभ्रंश **(d) गुर्जर अपभ्रंश से**

3. कालबेलियां

✓ ये नाथों से नीचे होते हैं। इनकी प्रमुख गद्दी जोधपुर के ढिकाई गांव में कनीपाव की गद्दी हैं।

❖ राजस्थान के प्रमुख निर्गुण भक्ति धारा के सम्प्रदाय

➢ संत जसनाथ जी (जसनाथी सम्प्रदाय)

- इनके बचपन का नाम जसवंत सिंह था।
- इनका जन्म विक्रम संवत 1539 में बीकानेर के कतरियासर ग्राम में हमीर जी जाट व माता रूपांदे के यहाँ हुआ।
- इन्होंने गोरख आश्रम में गोरख नाथ से शिक्षा ग्रहण की, जहाँ आश्विन शुक्ल सप्तमी विक्रम संवत 1551 को ज्ञान प्राप्त हुआ।
- इनके उपदेश सिंभुदड़ा तथा कोंड़ा ग्रन्थों में उल्लेखित हैं।
- इस सम्प्रदाय के लोग जाल वृक्ष तथा मोर पंख को पवित्र मानते हैं।
- 24 वर्ष की अवस्था में आश्विन शुक्ल सप्तमी विक्रम संवत 1563 को ब्रह्मलीन हो गये। इन्होंने जीवित समाधि ली थी।
- इनके प्रमुख शिष्य होरोजी, हंसोजी, रूस्तमजी थे।
- इन्होनें योग पर बल दिया था।
- सिकन्दर लोधी इनसे प्रभावित थे, जिन्होंने कतियासर में इनकों जमीन प्रदान की थी।
- जसनाथ जी के अनुयायी जो इस संसार से विरक्त हो गये हैं, उन्हें परमहंस कहा जाता हैं।
- इन्होने अपने अनुयायीयों को 36 नियमों का पालन करने की आज्ञा दी हैं।
- जाट इनके अधिक अनुयायी थे। जो गले में काली ऊन का धागा बांधते हैं।
- जमीन में समाधि लेना, रात्री जागरण, अग्नि पर नृत्य करना आदि कार्य करते हैं।
- कतरियासर में आश्विन शुक्ल सप्तमी को मेला लगता हैं।
- इस सम्प्रदाय की पांच प्रमुख पीठे निम्न प्रकार हैं – 1. बमलू - बीकानेर 2. लिखमादेसर-बीकानेर 3. पूनरासर – बीकानेर 4. मालासर – बीकानेर 5. पांचला – नागौर

❖ संत जांम्भो जी (विश्नोई सम्प्रदाय)

- इनका जन्म नागौर के पीपासर ग्राम में भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को हुआ था।
- पिता का नाम - लोहट तथा माता का नाम - हंसा देवी, ये पंवार वंशीय राजपूत थे।
- इनका मूल नाम धनराज था।
- इन्हें पर्यावरण वैज्ञानिक, गहला व गूंगा के नाम से भी जाना जाता था।
- जांम्भोजी ने जम्भ संहिता, जम्भ सागर, शब्दवाणी, विश्नोई धर्म प्रकाश नामक ग्रंथ लिखे।
- जांम्भोजी के उपदेश स्थल को साथरी कहा गया।
- इन्होंने आत्मा को अमर तथा ईश्वर के समान सर्वव्यापक माना हैं एवं मोक्ष के लिए गुरू होना अनिवार्य माना हैं।
- विश्नोई पंथ की दीक्षा लेने वाले को गुरू मंत्र पिलाया जाता हैं, जिसे महल कहा जाता हैं।
- जाम्भोजी ने इस संसार को गोवलवास (अस्थायी निवास) बताया हैं।
- माता पिता की मृत्यु के बाद बीकानेर के सभास्थल (समरास्थल) चले गये वहाँ हरि सत्संग करते थे।
- यहाँ धोकधोरा नामक स्थान पर कार्तिक कृष्ण अष्टमी सन् 1485 ई. को विश्नोई सम्प्रदाय की स्थापना की।
- जीव हत्या, वृक्ष काटना, छुआछूत- ऊंच-नीच के निवारा के लिए लोगों को 29 नियमों के पालन करने की सलाह दी।
- ये नियम इन्होंने हिन्दू धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म से लिए थे।
- इन नियमों का पालन करने वालें विश्नोई कहलायें। विश्नोई सम्प्रदाय इनका पालन करते थे।
- माघ कृष्ण नवमी को तालवा - मुकाम नामक स्थान पर शरीर छोड़ दिया।

- गुरु जम्भोजी के सम्मान में बीकानेर के नरेश ने अपने झण्ड़े में खेजड़े के वृक्ष को 'माटो' के रूप में रखा था ।
- जम्भसागर (जम्भोवाणी) **जांम्भोजी** का प्रमुख ग्रंथ हैं । इन्होंने विष्णु की भक्ति पर बल दिया व खुद को विष्णु कहा ।
-
- **जाम्भोजी के आठ धाम –**

1. पीपासर (नागौर) - जन्म स्थल
2. मुकाम (बीकानेर) – बीकानेर जिले की नोखा तहसील में मुकाम नामक स्थान पर समाधि स्थल है, जहां आश्विन व फाल्गुन अमावस्या को मेला भरता हैं ।
3. लालसर (बीकानेर) - निर्वाण प्राप्त हुआ
4. जाम्भा (जोधपुर) - विश्नोई समाज का पुष्कर कहलाता हैं, यहां जैसलमेर के जैतसिंह ने तालाब का निर्माण करवाया, जहां चैत्र अमावस्या तथा भाद्रपद पूर्णिमा को मेला भरता हैं ।
5. जांगलू (बीकानेर) - भाद्रपद अमावस्या को व चैत्र अमावस्या को मेला भरता हैं ।
6. रामड़ावास (जोधपुर) - जाम्भोजी ने उपदेश दिये थे ।
7. लोदीपुर, मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश) - अपने भ्रमण के दौरान आये ।
8. रोटू (नागौर) - आराध्य स्थल हैं ।

➢ विश्नोई खेजड़ी की सरक्षार्थ अपने बलिदान के लिए जाने जाते हैं । करमा और गौरा ने जोधपुर के रैवासड़ी गांव में बलिदान दिया तथा अभय सिंह के शासन काल में अमृता देवी ने बलिदान दिया

विश्नोई सम्प्रदाय के प्रवर्तक गुरु जम्भेश्वर से संबंधित मुख्य स्थान हैं ? (R.A.S. 2003)

(a) लूनी (b) नौखा
(c) बालोतरा **(d) मुकाम**

❖ रामस्नेही सम्प्रदाय

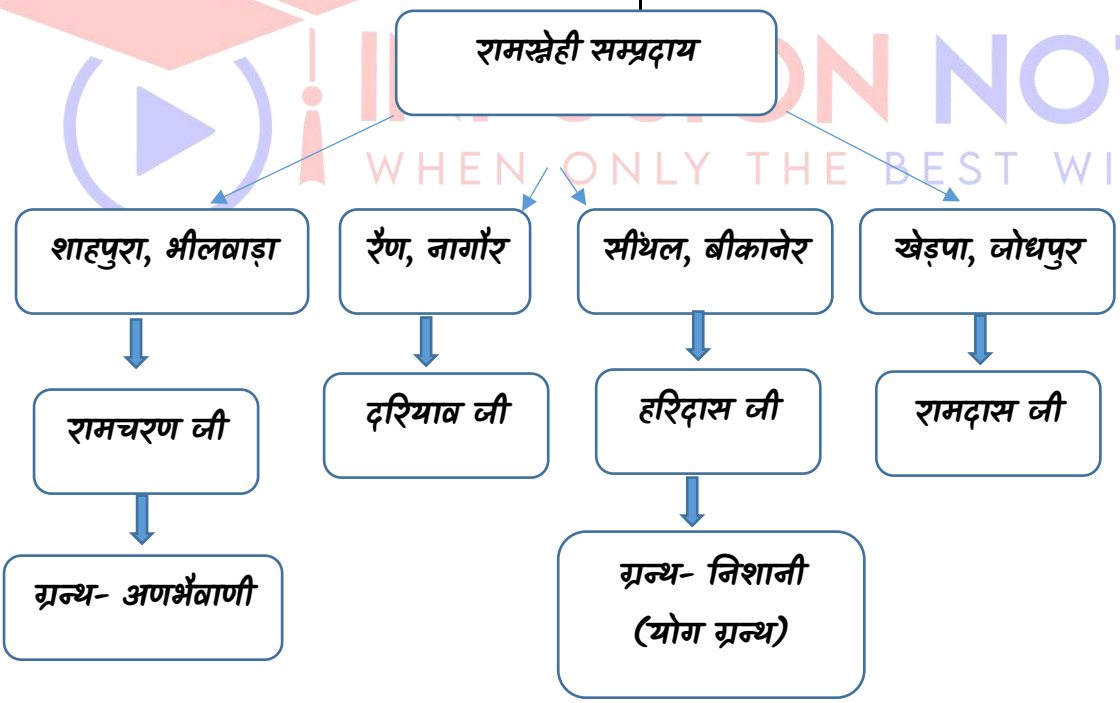

सच्चियां / सच्चिका माता	ओसियां (जोधपुर)	ओसवालों की कुलदेवी
चामुंडा माता	जोधपुर	प्रतिहार वंश की कुलदेवी
आशापुरी / महोदरी माता	मौंदरा (जालौर)	जालौर के सोनगरा चौहानों की कुलदेवी
जीण माता	सीकर	चौहानों की कुलदेवी
ज्वाला माता	जोबनेर	खानगरौतों की कुलदेवी

अभ्यास

❖ राजस्थान की लोक देवियाँ

1. सुगन चिड़ी को किस लोक माता का स्वरूप माना जाता जाता है ?

A. शीतला माता
B. नारायणी माता
C. स्वांगिया माता
D. नागणेची माता **(C)**

2. बीकानेर के राठौड़ों की इष्टदेवी कौन थी ?

A. नागणेची माता
B. नारायणी माता
C. करणी माता
D. तेमडाराय माता **(C)**

3. करणी माता के वंशज कहलाते हैं ?

A. काबा
B. देपावत
C. चिरजा
D. मंढ **(A)**

4. जीण माता के मंदिर का निर्माण किसने करवाया था ?

A. हमीर देव
B. राजा हट्टड़
C. प्रथ्वीराज चौहान तृतीय
D. महाराणा कुंभा **(B)**

5. कछवाहा वंश के इष्ट देवी/आराध्य देवी कौन हैं ?

A. शीला माता
B. जमुवाय माता
C. सकराय माता
D. सच्चियाय माता **(B)**

6. राजस्थान की एकमात्र लोक देवी कौनसी हैं जिसकी खंडित रूप में पूजा होती है ?

A. जमुवाय माता
B. शीला माता
C. शीतला माता
D. ब्राह्मणी माता **(C)**

7. किस लोक देवी के मंदिर के सामने बोहरा भगत की छतरी स्थित हैं ?

A. शीतला माता
B. नारायणी माता
C. कैला देवी
D. शीला देवी **(C)**

8. किस लोक देवी के मंदिर में मुगल बादशाह सवा मन तेल पहुंचाते थे ?

A. जीण माता
B. करणी माता
C. शीला माता
D. शीतला माता **(A)**

9. राजसमंद झील में किस लोकदेवी का स्थान (मंदिर) स्थित हैं?

A. घेवर माता
B. जीण माता
C. तनोट माता
D. आवड़ माता **(A)**

10.बाणमाता कौन से राजपूत वंश की कुल देवी हैं ?

A.राठौड़ वंश
B.सिसोदिया वंश
C.चौहान वंश
D. गुहिल वंश **(D)**

- "दादीजी" - राणी सती (झुंझुनू)
- "बावजी" - मोतीलाल तेजावत (भील नेता)
- जंगलधर बादशाह - लूणकरण (बीकानेर). कर्ण सिंह (बीकानेर)
- "रानीजी" - लेखिका लक्ष्मी कुमारी चुण्डावत
- सुल्तान तारेकिन (सन्यासियों के सुल्तान) - हमीदुद्दीन नागौरी
- कलियुग की वाल्मीकि - हरिदास निरंजनी (निरंजनी सम्प्रदाय, नागौर)
- "कवि बांधव" - बीसलदेव (बिग्रहराज चतुर्थ)
- हिन्दूपत (हिंदुआ सूरज) – महाराणा सांगा
- बांगड़ के धनी - नरहड़ के पीर
- आधुनिक जयपुर के निर्माता - मिर्जा इस्माइल (मानसिंह द्वितीय के प्रधानमंत्री)
- राजस्थान का नेहरू - पंडित जुगल किशोर चतुर्वेदी (भरतपुर)
- मीलो का चितेरा - गोवर्धन लाल बाबा (राजसमंद)
- शेर-ए-राजस्थान - लोकनायक जय नारायण व्यास
- भैंसों का चितेरा - परमानंद चोयल
- आधुनिक राजस्थान के निर्माता - भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया
- मूडस या मनः स्थितियों के चित्रकार - विद्यासागर उपाध्याय
- खड़ताल के जादूगर - सद्दीक खान (बाड़मेर)
- "वीर रसावतार " - सूर्यमल मिश्रण
- "गीगला का बापू" - गणपत लाल डांगी
- भपंग के जादूगर - जहूर खान मेवाती (अलवर)
- जादू के विश्व सम्राट - सम्राट शंकर जादूगर (गंगानगर)
- नगाड़े का जादूगर - रामकिशन (पुष्कर, अजमेर)
- नैन चित्रकला के जादूगर - कैलाश चंद्र शर्मा।
- अलवर का रसखान - अलीबख्श (अतरौली घराने के संगीतज्ञ)
- "रुलाने वाले फकीर " - मानतौल खान
- प्रयोग धर्मी चित्रकार - सुधीर वर्मा
- पखावज के जादूगर - पंडित पुरुषोतम दास (नाथद्वारा, राजसमंद)
- तनावपूर्ण चित्रों के जादूगर - अब्दुल करीम (शाहपुरा, भीलवाड़ा)
- नारायण सिंह बेगंनीया (धौलपुर), देश का सबसे छोटे कद का कलाकार।
- राजस्थान जुबान की मशाल - डॉ. सीताराम लालस (एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका द्वारा कहा गया था)
- जाटों का प्लेटो (अफलातून) - राजा सूरजमल (भरतपुर)
- मारवाड़ राज्य का कानून निर्माता - मुंशी देवी प्रसाद
- माच ख्याल के पितामह - बगसुलाल खमेसरा (भीलवाड़ा)
- चिड़ावा (झुंझुनू) के गाँधी - मास्टर प्यारेलाल गुप्ता
- राजस्थान का भारतेन्दु - शिवचंद्र भरतिया
- घोड़े वाले बाबा - कर्नल जेम्स टॉड
- माउन्ट एवरेस्ट ऑफ़ म्यूजिक - संगीत सम्राट अल्लदिया खान (मी. जयकर ने कहा)
- राजस्थान की लता मंगेशकर - सीमा मिश्रा
- राजस्थान की हेमा मालिनी - नीलू
- राजस्थान की जलपरी - रीमा दत्ता (अजमेर)
- शेखावटी के गाँधी - बद्रीनारायण सोढाणी (सीकर)

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अभ्यास प्रश्न

I. आरएएस मुख्य परिक्षा गत वर्ष प्रश्न

Q1. डॉ. एल. पी. टेस्सीटोरी की विवेचना कीजिए। [2012]

Q2. भारतेन्दु हरिश्चंद्र हिंदी साहित्य में आधुनिक प्रवृत्तियों के अग्रदूत थे विवेचना कीजिए। [2018]

Q3. उद्योतन सूरि की विवेचना कीजिए। [2012]

Q4. अल्लाह जिलाई बाई की संक्षिप्त में विवेचना कीजिए। [2012]

Q5. मुहणौत नैणसी का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

Q6. स्वतंत्रता संग्राम में शाहपुरा के बारहठ परिवार का योगदान बताइए।

Q7. आदिवासियों के उत्थान में मोतीलाल तेजावत की भूमिका बताइए।

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

Rajasthan CET (Graduation)-2023 - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)

FREE SAMPLE

RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Rajasthan CET Gradu. Level	07 Janu.2023(1st shift)	96 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp - https://wa.link/uwc5lp

Online order - https://bit.ly/3X6MGue

Call करें 9887809083